83 वाँ वर्ष राष्ट्र के विश्वास के नाम

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

सप्तरंग

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, साल्टलेक
की हिंदी पत्रिका अंक : अप्रैल— सितम्बर 2025

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

Azadi Ka Amrit Mahotsav
G20
साइबर जागरुकता
दैनिक सुरक्षा युक्तियाँ
CSOC
CISO OFFICE
साइबर सुरक्षित बनें
अज्ञात संदेशों या कॉल का जवाब देने से बचें।
क्लिक करने से पूर्व सोचें।
किसी भी अजनबी के कहने पर उपयोगकर्ता द्वारा प्रेरित कार्यों में शामिल होने से बचें।
अज्ञात ऐप्स या अटैचमेंट डाउनलोड करने से बचें।
संवेदनशील, व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी किसी के साथ साझा न करें।
अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल की सेटिंग्स को सबसे प्रतिबंधित स्तर पर रखें।
जागरूक रहें.. सुरक्षित रहें
CISO OFFICE
यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

सप्तरंग

सप्तरंग

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, साल्टलेक की
छमाही हिंदी पत्रिका
वर्ष-2, अंक-1
अप्रैल- सितंबर 2025

एक टीम-एक स्वप्न-एक लक्ष्य
सक्षम हैं हम-जीतेंगे हम

संरक्षक
प्रदीप आनंद केशरी
अंचल प्रमुख एवं
उप महाप्रबंधक

प्रेरणा
मोना कुमारी
उप अंचल प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक
रितांकर कुंडु
सहायक महाप्रबंधक

दिग्दर्शन
पूरबी दास मेहरा
मुख्य प्रबंधक

संपादक
रोशनी सरकार साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

यूको बैंक, अंचल कार्यालय , साल्टलेक
विद्युत भवन, डी जे ब्लॉक, सेक्टर –II
कोलकाता—700091
ई-मेल : zosaltlake.ol@uco.bank.in
फोन : 7044206866

इस अंक में दिए गए विचार लेखकों के हैं, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो ही यह आवश्यक नहीं है।

विषय	पृष्ठ सं.

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री का संदेश	4
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	6
अंचल प्रमुख का संदेश	7
संपादकीय	8
आलेख	
राजभाषा पर लेख	
बैंक उत्पादों के प्रचार-प्रसार में हिंदी भाषा का महत्व— रोशनी सरकार साव	10
बैंकिंग एवं डिजिटल लेख	
डिजिटल गिरफ्तारी घोटाला - शुभजीत पॉल	14
भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में ईएसजी - पौलमी कांता	16
विशेष	
साल्टलेक अंचल के जिलों का एक विस्तृत परिचय	20
साहित्यिक खंड	
हिंदी साहित्यकार	28
उड़िया साहित्यकार	30
प्रेरक प्रसंग	32
अंचल की गतिविधियां	34
विशेष खंड	
स्वतंत्र सेनानी	35
स्वास्थ्यनामा	37
कुछ मुस्कुरा लें	41

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

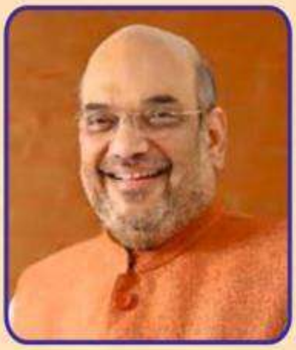

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,
आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ !

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासो में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़ -संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही** भाषा बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं , तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे , बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

अंचल प्रमुख की कलम से

प्रिय यूकोजन,

'सप्तरंग' अंचल कार्यालय साल्टलेक की छमाही हिंदी पत्रिका के माध्यम से आप सभी के साथ संवाद करने में मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिकाएँ किसी भी संस्था में अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए एक सर्वोत्कृष्ट मंच प्रदान करती हैं। भाषा के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है। पत्र-पत्रिकाएँ जहाँ विचारों को जन-मानस तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण साधन रही है, वहीं दूसरी ओर यह लोगों को रचनात्मक लेखन के लिए भी प्रोत्साहित करती है।

सफलता की सीढ़ी को बरकरार रखने और उससे आगे जाने के लिए हमें नई योजना के साथ पूरे उत्साह, उमंग,जोश, ऊर्जा और ज़िंदादिली से अत्युत्तम कार्य करने होंगे। अपनी सफलता का उत्सव मनाने का बेहतर तरीका यह भी है कि हम ग्राहकों को उत्तम सेवा प्रदान करते रहें क्योंकि उनकी सेवा में ही हमारी सफलता निहित है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूरा विश्व ग्राहक सेवा पर ही आधारित है। बैंकिंग क्षेत्र में हमें अपने ग्राहकों को त्वरित व सटीक सेवा देनी होगी ताकि वे हमसे सदैव जुड़े रहें। हमारी पूरी कोशिश हो कि हम ग्राहकों को बैंकिंग सेवा उनकी भाषा में दें। इससे ग्राहकों को हमारी संस्था के प्रति विशेष लगाव उत्पन्न होता है एवं हमारी सर्वोत्कृष्ट सेवा और तत्परता से ही ग्राहक भी हमारी मदद करने को तैयार रहते हैं।

हमें सफलता के लिए निरंतर लक्षित मार्ग पर चलना होता है। सफलता को कायम रखने के लिए हमें अपने कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा ताकि लोग हमारा अनुसरण करें। जब हम मार्गदर्शक की भूमिका में होते हैं तो हमारी जिम्मेवारी और ज्यादा बढ़ जाती है। हमें ज्यादा से ज्यादा नमोन्मेषी कार्य करने होंगे ताकि हम दूसरों का नेतृत्व कर सकें। हमें प्रगाढ़ अनुभव के साथ बाजार में अपने अस्तित्व को बनाए रखना होगा।

कहा जाता है **'अनुभव की भट्टी में जो तपते हैं, दुनिया के बाजार में वही सिक्के चलते हैं।'**

प्रदीप आनंद केशरी
अंचल प्रमुख एवं उप महाप्रबंधक

संपादकीय

प्रिय सुधीजन ,

सप्तरंग ई-पत्रिका का यह अंक आपके सामने प्रस्तुत है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक आपके मन को भा जाएगा। इस पत्रिका का मूल उद्देश्य अपने अंचल की गतिविधियों, राजभाषा में हो रहे कार्यो, कर्मचारियों के साहित्यिक एवं ज्ञान पक्ष में छमाही के दौरान सम्पन्न गतिविधियों से अवगत कराना साथ ही आपको अन्य बातों की जानकारी देना भी है ।

प्रस्तुत अंक में यूको बैंक, साल्टलेक अंचल के अंतर्गत आनेवाले जिलों की पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक,औद्योगिक, साहित्यिक आदि संदर्भों से परिचय कराया गया, जिससे सभी स्टाफ सदस्यों को विषेष रूप से शाखाओं को उन क्षेत्रों के बारे में जानने में और अधिक सुविधा होगी।

इस अंक में हिन्दी साहितकार के साथ साथ उड़िया के प्रसिद्ध साहित्यकार का तथा एक स्वतंत्र सेनानी श्री उधम सिंह के जीवन का संक्षिप्त परिचय भी पेश किया किया गया । इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी इस पत्रिका में समाहित की गई है । हमें आशा है कि यह अंक आपको पसंद आएगा| बैंकिंग एवं डिजिटल आलेख के साथ-साथ बैंकिंग में राजभाषा की महत्ता पर भी लिखे गए।

हमें पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे पाठको को काफी अच्छी लगेगी। पत्रिका के बारे में अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी देने के लिए आप दिए गए व्हाट्सएप्प नंबर पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

रोशनी सरकार साव
वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा

यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

" हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि

हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।

हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं

उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।

हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।

हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों

एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी

यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।"

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

बैंक उत्पादों के प्रचार-प्रसार में हिंदी भाषा का महत्व

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में राष्ट्रीयकरण के बाद राजभाषा अधिनियम 1963, यथासंशोधित 1967 व राजभाषा नियम 1976 के प्रावधान लागू हुए। राष्ट्रीयकरण से पूर्व बैंक क्लास बैंकिंग के रूप में कार्य कर रहे थे। बैंकों के ग्राहक सीमित थे। इनका प्रसार केवल नगरीय स्तर तक सीमित था। ग्रामीण व अर्धशहरी क्षेत्रों में तो बैंकों का प्रसार न के बराबर था। लेकिन राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकिंग ग्रामीणों व जनसाधारण से जुड़ी। संभवत: इसका प्रमुख कारण था, राष्ट्रीयकरण के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हिन्दी का महत्वपूर्ण प्रयोग क्योंकि कामकाज के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता थी, जो आम लोगों की भाषा हो। बैंकों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए कार्यतन्त्र स्थापित किया गया और हिन्दी का प्रयोग आंतरिक कार्य व ग्राहकों के संपर्क बिन्दु पर शुरू किया गया। ग्राहकों को व्यक्तिगत स्तर पर हिन्दी भाषा में बैंक की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया जाने लगा, जिससे वे अत्यधिक प्रभावित हुए। आज बैंकों में राजभाषा का प्रयोग ग्राहक स्तर पर और आंतरिक कार्यों के लिए दिन प्रतिदिन अधिक होता जा रहा है।

अंग्रेजों के शासनकाल में आधुनिक बैंकिंग की नींव पड़ी, अत: बैंकों में अंग्रेज़ी में कामकाज चलने की वजह से अभी तक कर्मचारियों में उसी भाषा में कार्य करने की प्रवृत्ति कायम है। कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की बात कही जाए तो राजभाषा विभाग तथा वहां कार्य करने वालों के बारे में सोचने का अंदाज़ इस तरह होता है कि यह विभाग बैंक के लिए क्या उपलब्ध करता है, जहाँ बैंकिंग में राजभाषा हिंदी का प्रयोग महत्त्वपूर्ण कार्य अर्थात ग्राहकों को बैंक के साथ जोड़ना सिखाता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में बैंकों के साथ ग्राहक को जोड़े रखना ही सबसे कठिन कार्य है। उनसे उनकी प्रिय भाषा में वार्तालाप करके व पत्र व्यवहार करके उन्हे बैंक की विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा सकती है। व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से उनकी ज़रूरतों को जान कर पूरा करने की कोशिश की जा सकती है व सुझाव दिए जा सकते हैं।

बैंकों ने राजभाषा के प्रयोग में अग्रणी कार्य किया है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में अपनी व्यावसायिक जड़ें मजबूत करने के लिए सबसे आवश्यक है, ग्राहकों का संतोष और ग्राहकों के संतोष के लिए जरूरी है उनसे उनकी अपनी भाषा में बातचीत। हिन्दी इस कसौटी पर खरी उतरती है। बैंकिंग उद्योग में विशेषत: जहां ग्राहक ही बैंक की आत्मा एवं आधार है, हिन्दी भाषा अर्थात सबसे सरल भाषा का प्रयोग अति आवश्यक हो जाता है।

अंग्रेजी पटरानी बन रही है और हिन्दी दसियों की तरह है। निश्चित रूप से अपनी भाषा लागू करना राष्ट्र का गौरव है और इसे किसी मजबूरी से नहीं अपितु स्वेच्छा से अपनाना होगा, इसे देश के लिए किया गया कार्य समझना होगा।

बैंकों में हिन्दी के प्रयोग के दो पक्ष हैं, कानूनी व व्यावहारिक। कानूनी पक्ष में सरकार कानून बना कर किसी कार्य को जनसाधारण से करवा लेती है। कानूनी पक्ष में भले सर्वहित विद्यमान होता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि लोग उसे मन से स्वीकार करें। व्यावहारिक पक्ष का सीधा संबंध लोगों के हित और रूचि दोनों से जुड़ा होता है। अत: वे कानून व नियम प्राय: असफल रहते हैं, जहां व्यावहारिक पक्ष प्रधान न हो। आज प्रत्येक व्यवसाय में, वह चाहे बैंकिंग हो या कोई अन्य, परंतु वस्तुस्थिति यह है कि राजभाषा का व्यावहारिक प्रयोग अपेक्षित स्तर तक अब तक नहीं हो पाया है। यह तभी संभव है जब कार्यपालक एवं वरिष्ठ अधिकारी राजभाषा नियम, अधिनियम, सरकारी आदेशों व प्रावधानों से भलीभाँति परिचित हों तथा उन्हें स्वेच्छा से कार्यरूप दें। बैंक का या किसी विशेष अनुभाग का प्रधान अकेले ही प्रयत्न करने के पश्चात भी पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। इसके लिए आवश्यकता है सभी कर्मचारियों के एकजुट होकर प्रयास करने की। परंतु जब तक उनमें नैतिक बोध जागृत नहीं होगा, तब तक वास्तविक रूप से राजभाषा का प्रयोग निष्ठापूर्वक नहीं हो पाएगा। इच्छा शक्ति बलवती होने पर असंभव भी संभव हो जाता है। अत: अब समय है कि सभी कर्मचारी अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाकर पूरा कामकाज स्वयं की जिम्मेवारी समझकर हिन्दी में करके राजभाषा हिन्दी को प्रतिष्ठित करने में अपना सक्रिय योगदान दें।

बैंकों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से कई नवोन्मेष कार्य प्रारंभ किए गए हैं। हिन्दी के प्रयोग के संबंध में अधिनियम, नियम व उपनियम बनाए गए। प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम बनाया जाता है जिसमें सभी बैंकों के लिए पत्राचार एवं हिन्दी के प्रयोग के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। यूको बैंक में पत्राचार प्रोत्साहन योजना का प्रावधान है। सरकार व बैंक अपने अपने स्तर पर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं बनाते रहते हैं।

बैंकों की विशिष्ट कार्य प्रकृति को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने देश के विभिन्न नगरों में अलग से राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति का मूल्यांकन करने तथा आवश्यक दिशा निर्देश देने के लिए केन्द्रीय सरकार के विभिन्न विभागों में हिन्दी सलाहकार समितियाँ व बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ और बड़े नगरों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ गठित की गई हैं। यह समितियाँ समय समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाती हैं। विजेताओं को पुरस्कृत भी किया जाता है। विशेष एवं उल्लेखनीय कार्यों के लिए भी पुरस्कारों की व्यवस्था की जाती है। व्यक्तिगत बैंक भी अपने स्तर पर हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। यह हिन्दी के प्रसार को बढ़ावा देने का एवं राजभाषा को व्यावहारिक रूप देने का एक सक्रिय साधन है।

राजभाषा नियम 1976 के प्रावधान के अनुसार बैंकों में प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा नियम व अधिनियम के उपबंधों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है। वास्तव में भाषा, संवाद, संपर्क और अभिव्यक्तियों का माध्यम होती है। यह केवल अभिव्यक्ति का साधन ही नहीं, राष्ट्र शक्ति, संपन्नता और संस्कृति का उदबोधक भी है।

बैंकों में व्यवसाय की तरह ही हिन्दी के प्रयोग में भी पूरी प्रतिस्पर्धा देखने में आ रही है। सभी बैंकों में हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग पर बल दिया जा रहा है। राजभाषा नियम व अधिनियम के अनुसार इन बातों को भी सुनिश्चित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं कि सभी फार्म व दस्तावेज, सामान्य आदेश एवं राज्य सरकारों को जाने वाले पत्रों का

प्रेषण हिन्दी में हो अथवा द्विभाषीय हो। अधिनियम की धारा 3(3) में निर्दिष्ट दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का दायित्व होगा कि वह इन्हें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में जारी करें।

बैंकों के शाखा कार्यालयों में ग्राहकों को फार्म हिन्दी में भर कर दिए जाएं। पास बुक, ड्राफ्ट, सावधि जमा रसीद, नकदी आदेश, अंतरण भुगतान आदेश आदि बनाना व विवरणियाँ बनाना आदि कार्य तो बहुत सरलता से हिन्दी में किए जा सकते हैं। प्रेषण अनुभाग का पूरा कार्य हिन्दी में किया जा सकता है। पासबुक में प्रविष्टि होने पर यदि ग्राहक उसे पढ़ न सके, तो ऐसी बैंकिंग कहाँ तक सफल मानी जा सकती है। वस्तुत: किसी भी नए कार्य को आरंभ करने में थोड़ी सी कठिनाई तो अनुभव होती ही है, लेकिन यदि उसे लगातार निष्ठा से किया जाए तो कठिनाइयाँ स्वत: ही दूर हो जाती हैं। कठिनाइयाँ उन्हीं के सामने आती हैं, जो काम करते हैं। जिसने श्रीगणेश ही न किया हो, उसे भला क्या परेशानी हो सकती है। कठिनाइयों पर विजय पाने वाला ही सफल होता है।

सरकार से प्राप्त वार्षिक कार्यक्रम को पूरा करने का लक्ष्य और बैंकों की निजी स्तर पर विभिन्न कार्य योजनाएं बहुत कुछ प्रशासनिक कार्य की प्रकृति के अनुसार विकसित हैं। आज सभी बैंकों की सभाओं में जब निरीक्षण रिपोर्ट देखी जाती है, तो उसमें यही पाया जाता है कि सभी बैंक लक्ष्य प्राप्ति के लिए होड़ लगा रहे हैं। कुछ बैंक तो लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं और बाकी लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहे हैं। परंतु जब तक इन्हें व्यवहारिक रूप नहीं दिया जाएगा, तब तक ये निरर्थक रहेंगे। प्रत्येक प्रशासनिक कार्यालय में राजभाषा अधिकारी भी नियुक्त किए गए हैं ताकि राजभाषा कार्यान्वयन को व्यवहारिक बनाने के लिए कोई भी समस्या आड़े न आए और वे कर्मचारियों को हिन्दी का ज्ञान व प्रशिक्षण भी देते रहें।

बैंकों में राजभाषा के प्रसार के लिए व्यक्तिगत बैंक अपनी कार्यप्रणाली के अनुसार त्रैमासिक अथवा छ:माही पत्रिकाएं भी प्रकाशित करवा रहे हैं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कर्मचारियों का ज्ञान बढ़ता है। वे लेख, कहानियाँ व कविताएं इत्यादि पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेज कर अपनी कला का प्रदर्शन तो करते ही हैं, साथ ही दूसरों को भी प्रभावित व उत्साहित करते हैं ताकि वे भी आगे आएं और अपने ज्ञान व रूचियों को दूसरों से बांटें। अपनी लेखनी उठा कर जिस रूप में भी चाहें, राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करें, इससे हिन्दी के प्रसार को पर्याप्त बढ़ावा मिलता है। राजभाषा कार्यान्वयन को व्यावहारिक रूप देने का यह अद्वितीय स्रोत है।

राजभाषा नियमों के अनुसार बैंकों के पुस्तकालयों में कुल पुस्तकों का कम से कम 50% पुस्तकें हिन्दी भाषा की होनी चाहिए। ऐसी पुस्तकें भी बनाई गई हैं, जिनके प्रयोग से बैंक कर्मचारी हिन्दी भाषा में अपना सम्पूर्ण कार्य आसानी से कर सकते हैं, यथा बैंकिंग शब्दावली, हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी टिप्पणी आदि।

जन जन तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचाना बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने का मुख्य उदेश्य था। अब इसे पूरा करना समय की मांग है। क्रेता बाजार व अत्यधिक विकल्प होने के कारण नए ग्राहक बनाना तो कठिन है ही, वर्तमान ग्राहकों को बनाए रखना भी टेढ़ी खीर हो गया है। वित्तीय समावेशन की अवधारणा अर्थात दूर दराज के क्षेत्रों में घर घर जाकर व्यक्तिगत रूप से वार्तालाप करके ग्राहक बनाना ही एक विकल्प है। यह विशेष कार्य किसी मशीन से नहीं, बल्कि मानव शक्ति से ही सम्पन्न हो सकता है। इस महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम दे सकती है तो केवल सरल व सामान्य भाषा। यदि हम ग्राहक से ग्राहक की ही भाषा में बात करेंगे, तभी वे हमारी बात को समझेंगे व अपनी आवश्यकताओं व समस्याओं को हमारे साथ बांटेंगे।

प्रत्येक उद्योग की मूलभूत कड़ी 'ग्राहक' होता है। आज ग्राहक केवल वहीं जाना पसंद करता है, जहां उसे विनम्र व्यवहार, आदर और समय की बचत का अवसर मिलता हो। यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगी कि एक संतुष्ट ग्राहक बैंक के लिए सर्वोपरि विज्ञापन होता है। इस कार्य में हिन्दी भाषा की अहम भूमिका है। अंग्रेजी भाषा में प्रत्येक ग्राहक को 'यू' कहकर संबोधित किया जाता है और हिन्दी भाषा में बात करेंगे तो आयु वर्ग के अनुसार 'आप', 'अंकल जी', 'भाई साहब', 'बेटा जी', 'माता जी', व 'बहन जी' कहकर संबोधित करेंगे। इससे ग्राहक निश्चित रूप से अनुभव करेंगे कि उन्हें आत्मीयता से व सम्मानपूर्वक संबोधित किया गया है तथा इस बात का उनके मन पर अवश्य ही सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

बैंकों में समय समय पर नई नई योजनाएं लागू की जाती हैं। ग्राहकों को नवीन योजनाओं की जानकारी देने के लिए आवश्यक है कि कर्मचारियों को पूर्णरूपेण ज्ञान हो। हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण की आवश्यकता इसलिए है कि अंग्रेजी में सभी कर्मचारी प्रशिक्षण या अनुकरण की सहायता से कितना भी काम कर लें, उसमें उनकी सहजता नहीं हो सकती। अत: आज नहीं तो कल, उन्हें जन जन की भाषा हिन्दी को अपनाना ही होगा। विशेषकर उस स्थिति में जब बैंक अपने विशिष्ट ग्राहकों की छवि से निकलकर आम आदमी के बीच पहुँच गए हैं। ज्यों ज्यों व्यापार में आम आदमी की सहभागिता और योगदान बढ़ रहा है, हिन्दी का प्रयोग भी बढ़ रहा है। अत: ग्राहक सेवा के संदर्भ में भी हिन्दी में प्रशिक्षण अति आवश्यक है।

राजभाषा विभाग द्वारा प्रशासित हिन्दी शिक्षण योजना के तहत हिन्दी में प्रशिक्षण देश के विभिन्न भागों में स्थित लगभग 230 केंद्रों में प्रदान किया जा रहा है। केन्द्रीय अनुवाद ब्युरो की स्थापना विभिन्न गैर वैधानिक साहित्य, हस्तपुस्तिकाओं/संहिताओं, प्रपत्रों आदि के विभिन्न प्रकारों के अनुवाद हेतु की गई थी। इस ब्युरो को अनुवाद कार्य के साथ जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को आयोजित करने के दायित्व सौंपे गए हैं।

वर्तमान युग सूचना के विस्फोट का युग है। प्रौद्योगिकी के विकास ने सूचना के आदान प्रदान के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। सूचना के आदान प्रदान का सशक्त माध्यम भाषा होती है। राष्ट्रीयकरण के बाद हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी थी कि तभी सूचना प्रौद्योगिकी ने क्रांति का रूप धारण कर लिया। देखते ही देखते मशीनें मानव के विकल्प के रूप में सामने आने लगीं। अत: हिन्दी का प्रयोग मशीनों और कम्प्यूटरों के आगमन से बाधित होने लगा। परंतु समय के साथ साथ हिन्दी भाषा के विकास में आने वाली ये बाधाएं भी दूर हो गईं। विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयरों की सहायता से केवल हिन्दी में ही नहीं, अपितु अनेक भारतीय भाषाओं में कंप्युटर पर कार्य किया जा सकता है।

हमारे देश में राजभाषा का दौर राजभाषा नीति के अंतर्गत अस्सी के दशक से आरंभ हुआ तथा तब से अब तक राजभाषा कार्यान्वयन में कोई व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ है। यदि कहा जाए कि यांत्रिकी, प्रौद्योगिकी को छोड़कर कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। अत: राजभाषा कार्यान्वयन में नएपन की आवश्यकता है। यह नयापन कहीं और से नहीं लाना है अपितु नवीनता संस्था विशेष की कार्यशैली में ही छुपी रहती है, बस उससे राजभाषा को जोड़ने के कुशल प्रयास की आवश्यकता है। राजभाषा को व्यापकता प्रदान करने के लिए कार्यान्वयन की शैली में संस्था के दायरे के अंतर्गत अभिनव परिवर्तन लाना चाहिए। राजभाषा को केवल राजभाषा नीति और भारत सरकार, गृह मंत्रालय के अतिरिक्त कर्मचारियों से भी जोड़ कर देखना चाहिए। एक ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए जिससे राजभाषा कार्यान्वयन की नई धड़कनों का अनुभव समस्त कर्मचारियों को होता रहे।

डिजिटल गिरफ्तारी घोटाला

शुभजीत पॉल
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, साल्तलेक

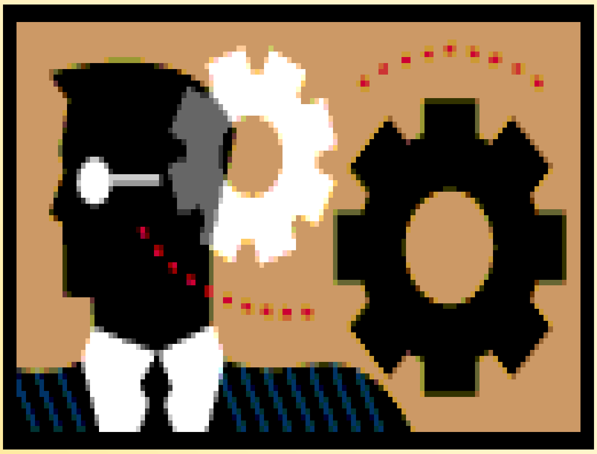

डिजिटल गिरफ्तारी घोटाला क्या है? हम इससे कैसे बच सकते हैं

डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले में, जालसाज अपने पीड़ितों को धोखा देने के लिए कानून प्रवर्तन अधिकारियों का रूप धारण करते हैं।

हाल ही में एक नया घोटाला सामने आया है, जिसके तहत व्यक्तियों और व्यवसायों को करोड़ों रुपये का भारी वित्तीय नुकसान हुआ है। यह घोटाला "डिजिटल गिरफ्तारी" के नाम पर किया जा रहा है। डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले में, धोखेबाज कानून प्रवर्तन अधिकारियों का रूप धारण करके पीड़ितों को ठगते हैं। प्रधानमंत्री ने भी इस घोटाले के संबंध में जनता को चेतावनी जारी की है और उनसे ऐसी किसी भी घटना की सूचना साइबर हेल्पलाइन पर देने का आग्रह किया है। इसके अलावा, कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम ऑफ इंडिया (CERT-In) ने उन तरीकों की एक सूची जारी की है, जिनके द्वारा ये धोखेबाज डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले सहित ऑनलाइन धोखाधड़ी को अंजाम देते हैं।

डिजिटल गिरफ्तारी घोटाला एक ऑनलाइन धोखाधड़ी है जिसके द्वारा पीड़ितों की मेहनत की कमाई लूट ली जाती है। घोटालेबाज पीड़ितों को डराते-धमकाते हैं और उन पर अवैध गतिविधियों का झूठा आरोप लगाते हैं। बाद में वे उनसे पैसे की मांग करते हैं और भुगतान करने के लिए उन पर दबाव डालते हैं।

डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले में, अपराधी सीबीआई एजेंट, आयकर अधिकारी या सीमा शुल्क एजेंट जैसे कानून प्रवर्तन अधिकारियों के रूप में खुद को पेश करते हैं और फोन कॉल के माध्यम से पीड़ितों से संपर्क करते हैं। इसके बाद, वे पीड़ितों से व्हाट्सएप और स्काइप जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से वीडियो संचार पर स्विच करने का अनुरोध करते हैं। फिर, स्कैमर वित्तीय कदाचार, कर चोरी या अन्य कानूनी उल्लंघनों जैसे विभिन्न कारणों का हवाला देते हुए पीड़ितों को डिजिटल गिरफ्तारी वारंट की धमकी देते हैं। कुछ मामलों में, ये धोखेबाज पीड़ितों को यह विश्वास दिलाने के लिए पुलिस स्टेशन जैसा माहौल बनाते हैं कि कॉल वैध है। "नाम साफ़ करने", "जांच में सहायता करने" या "वापसी योग्य सुरक्षा जमा/एस्क्रो खाते" के बहाने, लोगों को निर्दिष्ट बैंक खातों या यूपीआई आईडी में बड़ी रकम स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया जाता है। एक बार जब पीड़ित भुगतान कर देते हैं, तो स्कैमर गायब हो जाते हैं, जिससे पीड़ितों को वित्तीय नुकसान और संभावित पहचान चोरी का सामना करना पड़ता है।

धोखाधड़ी से बचने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है सतर्क रहना। ऐसे अपराधों से हमेशा सावधान रहें। डिजिटल धोखाधड़ी से बचने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

फर्जी अधिकारियों के फोन कॉल से सावधान रहें जो दावा करते हैं कि आप मुसीबत में हैं। यह हमेशा याद रखना महत्वपूर्ण है कि असली कानून प्रवर्तन एजेंसी के अधिकारी कभी भी आपसे भुगतान या बैंकिंग विवरण नहीं मांगेंगे।

साइबर अपराधियों द्वारा अपनाई जाने वाली "दबाव की रणनीति" के आगे न झुकें, जो "तत्काल कार्रवाई की भावना" उत्पन्न करके त्वरित कार्रवाई चाहते हैं।

यदि आपको कॉल पर संदेह हो, तो संबंधित एजेंसी से सीधे संपर्क करके उनकी पहचान सत्यापित करें। शांत रहें और घबराएं नहीं।

व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचें और फोन या वीडियो कॉल पर कभी भी संवेदनशील व्यक्तिगत या वित्तीय विवरण प्रकट न करें, खासकर अज्ञात नंबरों पर। सरकारी एजेंसियां आधिकारिक संचार के लिए व्हाट्सएप या स्काइप जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग नहीं करती हैं।

अगर आपको लगता है कि आपके साथ धोखाधड़ी हो रही है, तो घटना की सूचना स्थानीय पुलिस या साइबर अपराध अधिकारियों को देना कभी न भूलें।
CERT-In की ओर से जनता को जारी सलाह में कहा गया है कि इस "उभरते साइबर खतरे" से खुद को बचाने के लिए "सतर्क और सूचित" रहना महत्वपूर्ण है।
यदि आप डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले के शिकार हैं, तो पहला कदम तुरंत अपने बैंक की रिपोर्ट करना और अपना खाता फ्रीज करना है।
राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (cybercrime.gov.in) पर शिकायत दर्ज करें।
आपके पास जो भी सबूत हों, उन्हें हमेशा सुरक्षित रखें — कॉल विवरण, लेनदेन विवरण, संदेश आदि। जरूरत पड़ने पर वकील से मदद लें।

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में ईएसजी: बढ़ती अहमियत का एक समीकरण

पौलोमी कांता
वरिष्ठ प्रबंधक
चकबरबेरिया शाखा

मानव जनित जलवायु परिवर्तन हमारे समय की सबसे गंभीर चिंता है। इस चुनौती से निपटने के लिए, दुनिया भर की सरकारें और नियामक निकाय व्यापार जगत में पर्यावरण, सामाजिक और सामाजिक (ईएसजी) दृष्टिकोण को अपनाने के लिए अत्यंत तत्परता से प्रयासरत हैं। 2015 में हस्ताक्षरित पेरिस जलवायु समझौता, जिसने 196 देशों को जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए कदम उठाने हेतु कानूनी रूप से बाध्य किया, इस दिशा में उठाया गया एक निर्णायक कदम था। वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के वित्तीय संरक्षक के रूप में, बैंकों पर अपनी भूमिका निभाने का काफी दबाव है। ईएसजी प्रभाव के दो प्रमुख क्षेत्र हैं जिन पर विश्व भर के बैंक आसानी से और तुरंत ध्यान दे सकते हैं। पहला, बैंक के मानकों में ईएसजी मानकों और लक्ष्यों को लागू करना। दूसरा, बैंक अपनी नीतियों में, विशेष रूप से ऋण देने और उधारकर्ताओं को ईएसजी-केंद्रित होने के लिए प्रेरित करने में, अपनी ईएसजी जागरूकता को कैसे दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, स्थिरता सिद्धांतों के अनुरूप कंपनियों, जिनमें बैंक भी शामिल हैं, को चुनने के प्रति ग्राहकों और निवेशकों की जागरूकता लगातार बढ़ रही है।

नियामक निकाय ऐसे दिशानिर्देश और नियम भी तैयार कर रहे हैं जो बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों को अपने जोखिम प्रबंधन ढांचे में ईएसजी (पर्यावरण, स्थिरता और एकीकरण) पर विचार करने के लिए बाध्य करते हैं। अब स्थिरता केवल एक नैतिक दायित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यवसाय और निवेश के लिए भी एक प्रेरक शक्ति है। अच्छी खबर यह है कि बैंकों के लिए स्थिति पूरी तरह से निराशाजनक नहीं है। अल्वारेज़ एंड मार्सल की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि यूरोप और उत्तरी अमेरिका के प्रमुख बैंक, यदि टिकाऊ अर्थव्यवस्था की ओर पर्याप्त प्रतिबद्धता दिखाते हैं, तो 2030 तक अपने राजस्व में 10% की वृद्धि कर सकते हैं। यह राजस्व उनके ऋण ढांचे में हरित और टिकाऊ ऋण उत्पादों और सेवाओं से प्राप्त हो सकता है।

बैंकों के पास पर्यावरण, कल्याण और विकास (ईएसजी) सिद्धांतों पर आधारित विभिन्न राजस्व स्रोतों तक पहुँचने की क्षमता है। इनमें ग्राहकों के ईएसजी प्रदर्शन के आधार पर उनका मूल्यांकन और रेटिंग करना शामिल हो सकता है, ताकि उनकी हरित वित्त और प्रोत्साहनों के लिए पात्रता का पता लगाया जा सके। इसके अतिरिक्त, बैंक कार्बन उत्सर्जन करने वाले ग्राहकों और कार्बन तटस्थता को बढ़ावा देने के लिए कार्बन उत्सर्जन की भरपाई करने वाले ग्राहकों के बीच संबंध स्थापित कर सकते हैं। एक अन्य संभावना कार्बन कैलकुलेटर, एकीकृत उत्सर्जन विवरण और कार्बन ऑफसेट डिपॉजिट जैसे नए उत्पादों का निर्माण करना है, ताकि ग्राहक अपने उत्सर्जन को माप सकें, उसकी निगरानी कर सकें और उससे निपट सकें।

वैश्विक सतत विकास रिपोर्ट में सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के मामले में भारत 163 देशों में से 121वें स्थान पर है। हालांकि यह रैंकिंग उत्साहजनक नहीं है, फिर भी भारत ने ईएसजी पर अपना ध्यान बढ़ाना शुरू कर दिया है। भारत सरकार संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से बनाए गए सतत विकास लक्ष्यों और 2008 में शुरू की गई जलवायु परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना जैसी पहलों के माध्यम से कंपनियों को ईएसजी प्रथाओं को अपनाने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित कर रही है।

भारत सरकार ने 2070 तक नेट ज़ीरो लक्ष्य हासिल करने की दृढ़ प्रतिबद्धता जताई है। इसके अलावा, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहलों पर भी ज़ोर दिया जा रहा है। 2014 में, भारत सीएसआर को अनिवार्य बनाने वाला पहला देश बना, जिसके तहत एक निश्चित कारोबार और लाभप्रदता वाली कंपनियों को अपने 3 वर्षों के औसत शुद्ध लाभ का 2 प्रतिशत शिक्षा, गरीबी, लैंगिक समानता और भूख जैसे क्षेत्रों में निवेश करना अनिवार्य हो गया। भारत का ग्रीन हाइड्रोजन मिशन विश्व की सबसे बड़ी ऐसी पहल होने की उम्मीद है और इससे भारत को 2070 तक नेट ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में ईएसजी परिवर्तन को मुख्य रूप से भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) द्वारा संचालित किया जा रहा है। 'जलवायु जोखिम और सतत वित्त' पर अपनी रिपोर्ट में, आरबीआई ने बैंकों को अपने ईएसजी जोखिमों का आकलन और प्रबंधन करने तथा यह सुनिश्चित करने के लिए दिशानिर्देश या सुझाव जारी किए हैं कि उनके संचालन और रणनीतियाँ ईएसजी सिद्धांतों के अनुरूप हों। बैंकों को इसका लाभ उठाकर अपने ईएसजी जोखिमों की पहचान और आकलन करना चाहिए तथा उन्हें कम करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए।
इंडियन बैंक्स एसोसिएशन (आईबीए) ने ऋण मूल्यांकन करते समय ईएसजी फ्रेमवर्क तैयार करने और जलवायु जोखिम को अपनी जोखिम मूल्यांकन रणनीति में शामिल करने की प्रतिबद्धता जताई है। दिसंबर 2022 में जी20 शिखर सम्मेलन से पहले, आईबीए ने स्थिरता से लेकर हरित वित्तपोषण तक के ईएसजी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए बैंकों के एक समूह का गठन भी किया था। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की शीर्ष 100 कंपनियों में से 79 प्रतिशत कंपनियां एक अलग ईएसजी रिपोर्ट प्रकाशित करती हैं।

ईएसजी पर बढ़ते ध्यान के बावजूद, भारतीय बैंकिंग क्षेत्र ईएसजी नीतियों के कार्यान्वयन में अभी तक कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डाल पाया है। सीआरआईएसआईएल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2022 के अनुसार, भारत में अधिकांश वित्तीय संस्थान अपने स्वयं के स्कोप 3 उत्सर्जन का हिसाब नहीं रख रहे थे। इसके अलावा, बैंक और वित्तीय संस्थान अभी तक बीएसबीआर और नेट जीरो प्रतिबद्धताओं के अनुरूप नहीं हैं।

ईएसजी रिपोर्टिंग और ट्रैकिंग में कई कमियों का कारण बैंकों में ईएसजी के महत्व के बारे में जागरूकता और समझ की कमी, साथ ही ईएसजी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहन और कड़े नियमों का अभाव है। फिर भी, बैंकों से इस चुनौती का सामना करने की अपेक्षा बढ़ती जा रही है। एमएससीआई की एक रिपोर्ट के अनुसार, बैंकों और वित्तीय संस्थानों से जलवायु जोखिम तनाव परीक्षण करने की उम्मीद की जाएगी।

बैंकों को यह पता चल रहा है कि पर्यावरण संरक्षण और डिजिटल परिवर्तन दोनों को अपनाने से परस्पर सुदृढ़ीकरण हो सकता है, जिससे दोनों क्षेत्रों में एक साथ प्रगति हो सकती है। यद्यपि डिजिटल और ईएसजी दोनों परिवर्तनों को एक साथ करने की चुनौती चुनौतीपूर्ण लग सकती है, बैंकों को इस तथ्य से राहत मिल सकती है कि दोनों उद्देश्यों में काफी समानताएं हैं। इसके अलावा, जो बैंक दोनों क्षेत्रों में उचित स्तर की परिपक्वता प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें बाजार में एक स्पष्ट प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त होगा, क्योंकि उनके व्यापक प्रस्तावों का मुकाबला करने में कुछ ही प्रतिद्वंद्वी सक्षम होंगे। दोहरे परिवर्तन के सफल कार्यान्वयन के लिए बैंकों को न केवल अपने प्रौद्योगिकी प्रणालियों और व्यावसायिक प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण करना होगा, बल्कि अपने कार्यबल, संस्कृति, संगठनात्मक संरचना और कुछ मामलों में, अपने मूलभूत मूल्यों में भी बदलाव लाना होगा।

यूरोपीय संघ में, कई देशों ने ईएसजी कानूनों को लागू करना शुरू कर दिया है और अन्य देश भी उनका अनुसरण कर रहे हैं। यह बैंकिंग के एक नए युग की शुरुआत है, जहां बैंकों को अपने स्वयं के ईएसजी प्रभाव के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा और उनसे अपने ग्राहकों की व तैयारियों की निगरानी करने की अपेक्षा की जाएगी।

स्रोत : फाइनेंशियल एक्सप्रेस।

हिंदी आसान है, इसे अपनाइए

हम आंतरिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग करते हैं।

हम पत्रों पर हिंदी में टिप्पणी लिखते हैं।

हम हिंदी पत्राचार का स्वागत करते हैं।

हम हिंदी में मूल पत्राचार करते हैं।

हम मूल रूप से हिंदी में टिप्पण(नोट) लिखते हैं।

हम हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में ही देते हैं।

हम देश की सभी भाषाओं का सम्मान करते हैं।

हम राजभाषा नीति का निष्ठापूर्वक अनुपालन करते हैं।

हिंदी से हम जुड़ें, हिंदी हमें जोड़े

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

साल्टलेक अंचल के जिलों से एक पहचान

उत्तर 24 परगना एवं हावड़ा जिला का

यूको बैंक, साल्टलेक अंचल की स्थापना सन 1986 में हुई। साल्तलेक अंचल के अंतर्गत कुल 84 शाखाएं हैं जो उत्तर 24 परगना और हावड़ा जिले में फैली हुई है। इन जिलों के बारे में विस्तृत अलोचना पेश की गई है, जिससे सभी के मानस पटल पर यह एक मानचित्र की भांति प्रतिबिम्बित हो।

उत्तर 24 परगना मुगल काल में ग्रेटर 24 परगना का इलाका सतगांव (पुराना सप्तग्राम , जो अब हुगली जिले में है) प्रशासन के तहत था और बाद में इसे हुगली में शामिल कर लिया गया। मुर्शिद कुली खान के राज में चकला (मुगल नवाबी राज के बाद का ज़िला) पर कब्ज़ा हो गया था । 1757 में, प्लासी की लड़ाई के बाद, नवाब मीर जाफ़र ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को 24 परगना और जंगली महलों (छोटी एडमिनिस्ट्रेटिव यूनिट) की ज़मींदारी दी। ये थे अमीरपुर , अकबरपुर, बलिया, बिरती , अज़ीमाबाद , बसंधरी , बारीधाती , बागजोला , कालीकाता , गढ़, हत्यागढ़ , इस्लामपुर , दक्षिण सागर, खारिजुरी , खासपुर , इख्तियारपुर , मध्यमग्राम , मगुरा, मेदनमल्ला , मैदा, मानपुर , मुरगाछा , पेचकुली , पैकान , राजारहाट , शाहपुर, शाहनगर, सताल और उत्तर परगना। तब से, यह पूरा इलाका चौबीस परगना के नाम से जाना जाता है ।

1983 में, डॉ. अशोक मित्रा की अध्यक्षता में एक एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म कमिटी ने ज़िले को दो हिस्सों में बांटने का सुझाव दिया और समिति की सिफारिश के अनुसार दो ज़िले – उत्तर और दक्षिण 24 परगना बनाए गए। उत्तर 24 परगना, जिसे प्रेसीडेंसी डिवीज़न में शामिल किया गया था, ग्रेटर 24 परगना के 5 सब-डिवीज़न के साथ बनाया गया है, जिनके नाम हैं बारासात (हेडक्वार्टर), बैरकपुर, बशीरहाट , बनगांव और बिधाननगर (कोलकाता का एक सैटेलाइट टाउनशिप, जिसे साल्टलेक के नाम से जाना जाता है)।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर कोलकाता के पास दक्षिणेश्वर में मौजूद सबसे मशहूर हिंदू मंदिर है । हुगली नदी के पूर्वी किनारे पर मौजूद इस मंदिर की मुख्य देवी भवतारिणी हैं । इस मंदिर को 1855 में रानी रासमोनी ने बनवाया था, जो एक समाजसेवी और काली की भक्त थीं। यह मंदिर 19वीं सदी के बंगाल के एक रहस्यवादी रामकृष्ण से

दक्षिणेश्वर मंदिर के पास आद्यापीठ है , जो एक तीर्थस्थल है, आद्या माँ का मंदिर। श्री अन्नदा ठाकुर को सपने में सलाह मिली थी कि उन्होंने इंसान को प्यार और आदर्शवाद की बातें सिखाने के लिए 'आद्या माँ' का यह मंदिर बनवाया था। इसे 1340 बीएस में बनाना शुरू किया गया था और मंदिर का उद्घाटन 1375 बीएस में मकर संक्रांति (बंगाली कैलेंडर महीने पौष का आखिरी दिन) को हुआ था।

इसके नीचे श्री रामकृष्ण की मूर्ति है जिस पर "गुरु" लिखा है । पास ही बीच वाली वेदी पर आनंद ठाकुर को ईडन गार्डन में मिली आद्या माँ की मूर्ति की कॉपी है। यह मूर्ति 8 धातुओं से बनी है। पास में "ज्ञान और काम" लिखा है। सबसे ऊपर राधा और कृष्ण की मूर्तियों से सजाया गया है। पूरी दुनिया में इसे दिव्य जोड़ा कहा जाता है। वेदी पर प्रेम लिखा है। एक घंटा सूर्योदय से पहले मंगला आरती शुरू होती है, 10.30 बजे भोगराती है , सूर्योदय के 1.5 घंटे बाद शीतला आरती होती है।

हुगली नदी के किनारे बसी शुरुआती ब्रिटिश बस्तियों में से एक थी । बैरकपुर नाम अंग्रेजी शब्द बैरक्स से आया है। बैरकपुर को यह नाम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के पहले बड़े मिलिट्री बेस की जगह के तौर पर मिला। उस समय से पहले, बैरकपुर को चणक के नाम से जाना जाता था, और मनसा मंगल में इसी नाम से इसका ज़िक्र है। कहा जाता है कि मुगल बादशाह औरंगजेब के राज में, यह जगह " खजाना " (टैक्स) इकट्ठा करने का एक बड़ा केंद्र हुआ करता था और तब इसका नाम बारबकपुर रखा गया था । समय के साथ, इसका नाम बदलकर बैरकपुर हो गया। अपनी गर्मियों की हवा के लिए मशहूर, यह कोलकाता में अंग्रेजों के लिए नदी किनारे की एक प्रसिद्ध जगह थी।

महात्मा गांधी जी की याद में एक मकबरा, 120 तरह के गुलाबों से सजा हरा-भरा बगीचा, खूबसूरत पौधे और पेड़, खूबसूरत सूर्यास्त और एक रोमांचक नदी किनारे - गांधी घाट पैकेज आपको भीड़-भाड़ वाले कोलकाता से आज़ाद होकर शहर के बीच से लगभग 30 कीलोमीटर उत्तर में बैरकपुर जाने के लिए काफी है।

1948 में बना (जिस साल राष्ट्रपिता की मौत हुई थी), हुगली नदी के किनारे बना यह स्मारक और बड़ा सा बगीचा, जवाहर कुंज ' जिसे राज्य का वन विभाग देखरेख करता है ' शहर में रहने वालों को एक दिन की राहत देने योग्य है। इसका उद्घाटन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया था।

गांधी स्मारक संग्रहालय या गांधी मेमोरियल ट्रस्ट के कहने पर महात्मा गांधी पर बनाए गए मेमोरियल म्यूज़ियम।

बैरकपुर के म्यूज़ियम में अलग-अलग तरह के संग्रह महात्मा की व्यक्तित्व, सोच और कार्यक्रम या उनकी ज़िंदगी की घटनाओं के बारे में दिलचस्प और बहुत जानकारी देने वाला प्रत्यक्ष अनुसंधान सामग्री देते हैं।

मंगल पांडे पार्क मशहूर आज़ादी के सिपाही मंगल पांडे को समर्पित है। वह बैरकपुर कैंटोनमेंट में एक सिपाही थे जिन्होंने अंग्रेज़ों के खिलाफ़ बगावत की थी। उन्होंने अपनी बंदूक और तलवार से दो अंग्रेज़
अफ़सरों को घायल कर दिया था। इसलिए उनका कोर्ट मार्शल हुआ और 8 अप्रैल, 1857 को उन्हें फांसी दे दी गई। इस पार्क में मंगल पांडे की एक मूर्ति और उन्हें समर्पित एक मेमोरियल भी है। मंगल पांडे की मूर्ति के सामने सम्मान में एक छोटे हाथी के बच्चे की मूर्ति है जो अपनी सूंड उठाए हुए है।

अन्नपूर्णा तालिका
गंगा नदी के किनारे तितागढ़ के दक्षिणेश्वर मंदिर जैसा है । इसे 12 अप्रैल, 1875 (30 चैत्र 1281) को श्री श्री रामकृष्ण परमहंस ने भक्तों के लिए खोला था। यह मंदिर रानी राश्मोनी की सबसे छोटी बेटी जगदम्बा देवी ने बनवाया था। उनकी शादी मथुर मोहन बिस्वास से हुई थी, जिन्होंने अपनी पहली पत्नी की मौत के बाद, रानी राश्मोनी की दूसरी बेटी करुणामयी से जगदम्बा देवी से शादी की थी। यह शानदार मंदिर बैरकपुर के पास रानी राश्मोनी घाट पर है ।

नैहाटी बंकिम संग्रहालय बंकिम संग्रहालय भारत के महान उपन्यासकार और कवि ऋषि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का लाइब्रेरी म्यूज़ियम है। यह उत्तर 24 परगना के नैहाटी में कंथलपारा में है । 1954 में बना यह म्यूज़ियम, बगल में बने बड़े पुश्तैनी घर के सिर्फ़ एक हिस्से में है। खास तौर पर, बंकिम संग्रहालय (म्यूज़ियम) पिछले कुछ सालों में कोलकाता के पास सबसे ज़्यादा पसंद की जाने वाली जगहों में से एक बन गया है। यह जगह इसलिए खास है क्योंकि ऋषि बंकिम चंद्र ने यहीं भारत का राष्ट्रीय गीत, वंदे मातरम लिखा और बनाया था । यह हेरिटेज म्यूज़ियम इस बात का जीता-जागता सबूत है कि आज़ादी से पहले के भारत के दूसरे महान लोग जैसे ऋषि अरबिंदो घोष, चित्तरंजन दास, दीनबंधु मित्रा, केशव चंद्र सेन, महान कवि और लेखक के साथ इस शांत माहौल में कुछ अच्छा समय बिताने के लिए यहां आते थे।

कृष्णनगर के राजा कृष्ण चंद्र के राज में , राजा ने अपने दरबारी कवि भरत चंद्र रॉय को रॉय गुणाकर की उपाधि के साथ श्याम नगर में मुलाजोर नाम का गाँव दिया था। भरत चंद्र रॉय गुणाकर की याद में भारत चंद्र लाइब्रेरी नाम की एक बहुत पुरानी और ऐतिहासिक लाइब्रेरी है। यह रेलवे स्टेशन के बहुत पास है।
मुलाजोर की स्थापना की थी उत्तर 24 परगना के श्यामनगर में कालीबाड़ी । हुगली नदी के किनारे यह मंदिर बहुत ही सुकून देने वाले प्राकृतिक नज़ारे में है। यह मंदिर लगभग 200 साल पहले बंगाल साल 1219 में 31 बैशाख को हुगली नदी के किनारे बनाया गया था, इससे पहले कि रानी रासमोनी देवी ने दक्षिणेश्वर काली मंदिर बनवाया था, देवी काल की पूजा के लिए छह पुजारी रखे गए हैं।

सोलहवीं सदी के पहले हिस्से में बारानगर म्युनिसिपैलिटी के तहत मथुरा नाथ चौधरी स्ट्रीट में बनाया गया था। यह गंगा नदी के किनारे है। कहा जाता है कि श्री चैतन्य महाप्रभु नीलाचल (पुरी) जाते समय इस मठ में आए थे। बारानगर से निकलते समय उन्होंने इस मठ के उपासक को अपना चीथड़ा दान कर दिया था। तब से इस मठ का नाम कंठाधारी मठ पड़ गया। स्थानीय इतिहास के मुताबिक, आज़ादी की लड़ाई के दौरान यह क्रांतिकारियों की कुश्ती की जगह थी जहाँ आम तौर पर बंदूक और हथियार चलाना सिखाया जाता था। 26 अगस्त 1914 को बारानगर से हथियार लूटे गए और लूटे गए हथियारों में से 12 माउजर पिस्तौल श्री बिपिन बिहारी गांगुली के सबसे प्यारे दोस्त श्री खगेंद्रनाथ चटर्जी ने गौरंगा की मूर्ति के पीछे लकड़ी के बक्से में रख दिए। 2007 में, पश्चिम बंगाल हेरिटेज कमीशन ने इस मठ को हेरिटेज घोषित किया था।

यह उत्तर 24 परगना जिले के बैरकपुर सब-डिवीजन के तहत खरदाह में स्थित है। श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेश पर, श्री श्री नित्यानंद महाप्रभु ने ' हरिनाम' के लिए कुंजाबती को चुना। खरदाह में संकीर्तन – वैष्णवों का तीर्थ। श्री पुरंदर पंडित यहां प्रार्थना करते थे। उन्होंने नित्यानंद महाप्रभु को रहने और वैष्णव विचारधारा के प्रचार के लिए 26 बीघा ज़मीन दान की थी। उस समय से, नित्यानंद महाप्रभु के वंशज 500 सालों से इस प्रथा का पालन कर रहे हैं। कुंजाबती के पूर्वी हिस्से में, घर के आंगन में श्री नित्यानंद महाप्रभु की एक मूर्ति और उनकी पत्नियों बसुधा और जाह्नबी की कब्र है।

मशहूर कवि और धार्मिक व्यक्ति साधक रामप्रसाद का घर और आश्रम नॉर्थ 24 परगना के हालिसहर गांव में था, जो विरासत और सांस्कृतिक महत्व से भरपूर एक मशहूर जगह है। यह रामप्रसाद सेन का जन्मस्थान है जो देवी काली के सबसे मशहूर भक्तों में से एक थे। रामप्रसाद को उनके बनाए गीतों और कविताओं के लिए याद किया जाता है, जिन्हें रामप्रसादी संगीत के नाम से जाना जाता है। अपनी खासियत के लिए मशहूर रामप्रसादी धुन ने रवींद्रनाथ समेत बाद के कई कवि-संगीतकारों को प्रभावित किया। रामप्रसाद नादिया के महाराजा कृष्णचंद्र के करीबी दोस्त थे। रामप्रसाद ने यहां अपने पंचमुंडी आसन में साधना की , इसलिए इस जगह को स्थानीय तौर पर 'पंचबती मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है।

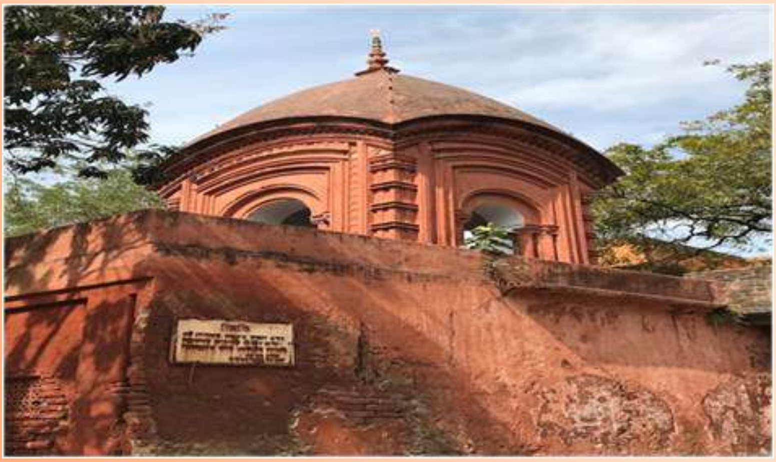

चंद्रकेतुगढ़, कोलकाता से सिर्फ़ 38 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में, उत्तर 24 परगना ज़िले में है। चंद्रकेतुगढ़ का इतिहास लगभग तीसरी सदी बीसी का है, जो मौर्य काल से पहले का है। इतिहासकार इस जगह की पहचान ग्रीक यात्री मेगस्थनीज़ की किताब 'इंडिका' में बताई गई पुरानी गंगारिदाई से करते हैं। अब वहां एक म्यूज़ियम है। चंद्रकेतुगढ़ म्यूज़ियम का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी ने 11 जनवरी 2019 को किया था। इस संग्रहालय में आर्कियोलॉजिकल खोजों का एक हिस्सा दिखाया गया है जिसे स्वर्गीय दिलीप कुमार ने इकट्ठा किया था। मैते, एक स्थानीय व्यक्तित्व हैं जिन्हें चंद्रकेतुगढ़ की पुरानी विरासत में दिलचस्पी है। दिलीप कुमार मैते ने इस जगह से कुल 524 पुरानी चीज़ें इकट्ठा कीं। उनकी मौत के बाद उनके बेटे श्री दीपन मैते ने ये

पुरातन बशीरहाट में कालीबाड़ी या बारो कालीबाड़ी बशीरहाट शहर के त्रिमोहिनी बस स्टॉप पर है। कहा जाता है कि 300 साल से भी पहले, इस मंदिर को लुटेरों के एक ग्रुप ने बनवाया था। उस समय, यह जगह बेंत की झाड़ियों से ढकी हुई थी और यहाँ कोई इंसानी बस्ती नहीं मिली थी। मुख्य रूप से मंदिर को नीपा ताड़ के पत्तों और बांस से बनाया गया था। लगभग 175 साल बाद, हरिमोहन दलाल नाम के एक असरदार ज़मींदार ने ईंटों से मंदिर को फिर से बनवाया और एक गहरा और बड़ा तालाब खुदवाया जो आज भी

इस्तेमाल हो रहा है। अब यह मंदिर न सिर्फ़ ज़िले के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है, बल्कि सबसे आकर्षक भक्ति स्थलों में से भी एक है। मंदिर तक ट्रेन और कार दोनों से पहुँचना बहुत आसान है। सबसे पास का रेलवे स्टेशन बशीरहाट है और बस स्टॉप त्रिमोहिनी है।

पुराने समय की वजह से आजकल मंदिर की छत की हालत ठीक नहीं है। पानी अक्सर डूबता है और कई नालियां बन जाती हैं। दीवारों को भी ठीक करने की ज़रूरत है। दूर से आने वाले मेहमानों के लिए अतिथिशला की भी ज़रूरत है।

गोपालनगर में दीनबंधु मित्रा का घर बोंगाँव सब-डिवीजन के गोपालनगर में चौबेरिया में है। दीनबंधु मित्रा बंगाल के जाने-माने नाटककार थे और उन्होंने अपनी रचना नीलदर्पण के ज़रिए विद्रोह को बढ़ावा दिया था। नीलदर्पण में बंगाल के नील किसानों द्वारा गाँव वालों पर किए जाने वाले अत्याचारों और ज़ुल्मों की साफ़-साफ़ जानकारी दी गई थी।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने बताया कि नील विद्रोह को प्रेरित करने में इस काम की भूमिका वैसी ही थी जैसी यूएस सिविल वॉर के पीछे हैरियट बीचर स्टोव की 'अंकल टॉम्स केबिन' की थी। दीनबंधु को, पोस्ट-मास्टर के तौर पर , बंगाल के अलग-अलग गांवों में घूमने का मौका मिला और नीलदर्पण , इन यात्राओं के दौरान उनके ऑब्ज़र्वेशन का नतीजा था।

गोपालनगर में बिभूतिभूषण बंदोपाध्याय का घर बोंगाँव सब-डिवीजन के गोपालनगर में है। बिभूतिभूषण बंगाली साहित्य के दिग्गजों में से एक थे और रवींद्रनाथ के बाद के समय के जाने-माने बंगाली उपन्यासकार थे। हालाँकि उनमें उच्च शिक्षा के लिए बहुत इच्छा और दिलचस्पी थी, लेकिन गरीबी के कारण स्नातक के बाद उन्हें इसे छोड़ना पड़ा और बोंगाँव हाई स्कूल में स्कूल शिक्षक की नौकरी कर ली। बाद में उन्होंने बंगाल के अलग-अलग स्कूलों में पढ़ाया और भागलपुर में ज़मींदार खेलत चंद्र घोष की कचहरी में भी काम किया।

बोंगाँव के एक गाँव में इच्चामती नदी के किनारे था। बिभूतिभूषण ने अपनी ज़्यादातर ज़िंदगी इसी घर में बिताई। उन्होंने इच्चामती नदी के किनारे अपने छोटे से घर को फिर से बनवाया और उसका नाम अपनी एक रचना के नाम पर 'शेषरखेया ' रखा। बिभूतिभूषण की मौत 1950 में घाटशिला में हुई।

टाकी में मिनी सुंदरबन या गोलपाटा वन (सुंदरबन जैव-विविधता और व्याख्या केंद्र) इच्छामती नदी के किनारे है। यह बहुत हटके है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण पर्यटक को पसंद आता है क्योंकि जंगल में सुंदरी, गारन, गेवोन , गोल, केओरा जैसे मैंग्रोव पौधे हैं। सुरक्षा के नज़रिए से यह टूरिस्ट के लिए ज़्यादा ज़रूरी है क्योंकि जंगल के सामने बीएसएफ कैंप है। यहाँ एक बहुत सुंदर कैनोपी वे और एक अधूरा वॉच टावर है। यहाँ लगभग 600.0 एकड़ ज़मीन है।

टाकी राजबाड़ी घाट से मिनी सुंदरबन तक फेरी की सुविधा और टॉय ट्रेन की सुविधा शुरू करने की सलाह दी जाती है ।पर्यटक के लिए इसे और आकर्षक बनाने के लिए जंगल के अंदर हिरण संरक्षण प्रोजेक्ट लगाने की बहुत ज़्यादा सलाह दी जाती है।

टाकी कुलेश्वरी कालीबाड़ी साल में कई पर्यटक इस जगह पर आते हैं। यह मंदिर लगभग 300 साल पुराना है।
पुराने मंदिर के साथ-साथ बाउंड्री के पास की सड़क, बिजली के काम, पास के तालाब को भी ठीक करने की ज़रूरत है।

टाकी जोड़ा मंदिर बहुत पुराना मंदिर है और भगवान शिव को समर्पित है, इसलिए बहुत से टूपर्यटक यहां आते हैं। यह मंदिर लगभग 200 साल पुराना है। पुराने मंदिर के साथ-साथ आस-पास की सड़क, बिजली के काम, आस-पास के तालाब और पेड़-पौधे लगाने की ज़रूरत है।

प्यूबर जमींदारी घड़ इस इलाके के दो सबसे पुराने राज महलों में से एक है। यह इमारत बहुत पुरानी है और यह टाकी में मुख्य पर्यटक को आकर्षित करने में से एक हो सकती है । अब बहुत से पर्यटक इस जगह पर आते हैं।
भवन को मरम्मत करने, पेड़ लगाने, और सुंदर बनाने की ज़रूरत है। इस पैलेस में एक संग्रहालय भी बन सकता है।

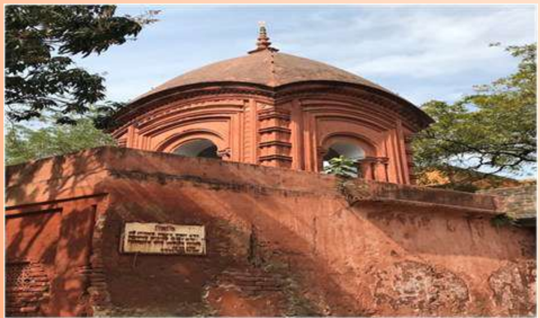

उत्तर 24 परगना (North 24 Parganas) का ऐतिहासिक महत्व ब्रिटिश काल से शुरू होता है जब 1757 में प्लासी की लड़ाई के बाद यह क्षेत्र ईस्ट इंडिया कंपनी को मिला, जो मुगल/नवाबी शासन के बाद '24 परगना' कहलाया; यह बैरकपुर (1857 के विद्रोह का केंद्र) और दक्षिणेश्वर (रानी रासमणि का मंदिर) जैसे महत्वपूर्ण स्थलों के कारण भी ऐतिहासिक है, और चंद्रकेतुगढ़ जैसे प्राचीन स्थलों व आध्यात्मिक केंद्र (जैसे हलीशहर, पानीहाटी) से समृद्ध है, जो इसे बंगाल के इतिहास, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाता है। 1757 में प्लासी युद्ध के बाद, मीर जाफ़र ने इस क्षेत्र के 24 परगना (ज़मींदारी) को ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया, जिससे यह क्षेत्र ब्रिटिश नियंत्रण में आया।

1983 में डॉ. अशोक मित्रा की समिति की सिफारिश पर इसे उत्तरी और दक्षिणी 24 परगना में विभाजित किया गया।

बैरकपुर क्षेत्र 1857 के सिपाही विद्रोह का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, जहाँ से देशभक्ति की पहली चिंगारी भड़की थी। दक्षिणेश्वर मंदिर की संस्थापक रानी रासमणि ने भी ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ खामोश विरोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। चंद्रकेतुगढ़ यह प्राचीन स्थल (3-4वीं शताब्दी ईसा पूर्व) मौर्य-पूर्व काल से जुड़ा है और महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजों के लिए जाना जाता है। दक्षिणेश्वर हुगली नदी के किनारे स्थित यह काली मंदिर (भवतारिणी)है और रानी रासमणि से जुड़ा है, जो बंगाल के भक्ति आंदोलन का केंद्र है। पानीहाटी चैतन्य महाप्रभु से जुड़ा 'चिड़ा उत्सव' यहाँ होता है, जो वैष्णवों के लिए महत्वपूर्ण है।

हालीशहर प्रसिद्ध संत कवि रामप्रसाद सेन का जन्मस्थान और आश्रम है, जो देवी काली के महान भक्त थे।

बैरकपुर छावनी शुरुआती ब्रिटिश बस्तियों में से एक और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा स्थान है।

टाकी इच्छामती नदी के किनारे बसा एक ऐतिहासिक शहर है।

संक्षेप में, उत्तर 24 परगना ऐतिहासिक रूप से ब्रिटिश उपनिवेशवाद, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, और बंगाल के समृद्ध धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण संगम रहा है, जिसमें प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक के कई अध्याय समाहित हैं।

हावड़ा जिले का ऐतिहासिक महत्व प्राचीन भुरशुट राज्य से जुड़ा है, जो 15वीं सदी तक इस क्षेत्र पर शासन करता था, और यह हुगली नदी के किनारे एक महत्वपूर्ण व्यापारिक बंदरगाह (बटोर) के रूप में विकसित हुआ, जिसे वेनिस यात्री सीज़र फेडरिची ने 1578 में वर्णित किया; बाद में, ब्रिटिश काल में 1714 में 5 गांवों (सल्किआ, हावड़ा, कासुंडिया, रामकृष्णपुर, बटोर) को कंपनी ने अपने कब्जे में लिया, जिससे यह कोलकाता का एक औद्योगिक जुड़वां और पूर्व का एक प्रमुख परिवहन केंद्र (हावड़ा जंक्शन) बन गया, जो भारत के इतिहास और विकास में महत्वपूर्ण रहा है।

हावड़ा क्षेत्र प्राचीन बंगाली राज्य भुरशुट का हिस्सा था, जो 15वीं सदी तक सक्रिय था, जिससे इस क्षेत्र की गहरी जड़ें दिखती हैं।

16वीं सदी के अंत में, वेनिस के यात्री सीज़र फेडरिची ने बटोर (आधुनिक हावड़ा का हिस्सा) का उल्लेख किया, जो बड़े जहाजों के लिए एक वाणिज्यिक बंदरगाह था। 1495 की बंगाली कविता 'मनासामंगल' में भी

इसके बाद 1714 में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने हुगली नदी के पश्चिमी किनारे के 5 गांवों (सल्किआ, हावड़ा, कासुंडिया, रामकृष्णपुर, बटोर) को फर्रुखसियार से प्राप्त किया, जिससे क्षेत्र का विकास शुरू हुआ। 1760 में प्लासी की लड़ाई के बाद, हावड़ा जिले का नियंत्रण ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में आ गया और 1843 में इसे हुगली जिले से अलग करके एक अलग जिला बनाया गया।

हुगली नदी के पश्चिमी तट पर स्थित होने के कारण, हावड़ा को कोलकाता के 'जुड़वां' शहर के रूप में जाना जाता है। हावड़ा जंक्शन रेलवे स्टेशन, पूर्व और दक्षिण-पूर्व रेलवे का मुख्यालय, इसे पूरे भारत से जोड़ता है, जिससे यह एक महत्वपूर्ण परिवहन केंद्र बन गया है। रवींद्र सेतु (हावड़ा ब्रिज) जैसे प्रसिद्ध पुल कोलकाता को हावड़ा से जोड़ते हैं, जो इसकी रणनीतिक महत्ता को दर्शाता है।

संक्षेप में, हावड़ा का इतिहास प्राचीन साम्राज्यों, महत्वपूर्ण व्यापारिक बंदरगाहों और ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान एक प्रमुख औद्योगिक और परिवहन केंद्र के रूप में इसके विकास से चिह्नित है, जो इसे पश्चिम बंगाल और भारत के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण बनाता है।

गजानन माधव मुक्तिबोध

एक परिचय

जन्म : 13 नवंबर 1917

मृत्यु : 11 सितंबर 1964

गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म **13 नवम्बर, 1917** को श्योपुर में माधवराव-पार्वती दंपत्ति के घर हुआ। मुक्तिबोध अस्तित्ववादी विचारधारा के समर्थक थे। हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, आलोचक, निबंधकार, कहानीकार तथा उपन्यासकार थे। उन्हें प्रगतिशील कविता और नयी कविता के बीच का एक सेतु भी माना जाता है। 1962 में उनके द्वारा तैयार की गई पाठ्य पुस्तक 'भारत: इतिहास और संस्कृति' को सरकार द्वारा प्रतिबंधित किए जाने से उनके मन को आघात लगा था।

47 साल की उनकी अल्पायु में उन्होंने जिस कठोर यथार्थ को भोगा उसकी अभिव्यक्ति 'फंतासी' या 'फ़ैंटेसी' के शिल्प में की है। **'अँधेरे में'** और **'ब्रह्मराक्षस'** सरीखी उनकी लंबी प्रसिद्ध कविताओं सहित अन्य कई कविताओं में कम-बेशी मात्रा में यही शिल्प उतरता हुआ नज़र आता है। हिंदी कविता में फ़ैंटेसी की पहचान मुक्तिबोध से ही होती है। यह फ़ैंटेसी कविता वातावरण के सृजन, वस्तुस्थिति के प्रत्यक्षीकरण, आत्मकथन, बिंब रचना, कर्ता के प्रवेश, काव्यवस्तु और काव्य-कर्ता के बीच संबंध निर्माण और अंतः क्रियाओं के सूत्रों का सृजन, कथ्य का उभार, प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से तय दिशा की ओर प्रस्थान, फ़ैंटेसी से बाहर सचेत वाचक की टिप्पणी आदि प्रक्रियाओं से गुज़रती है जहाँ मुक्तिबोध कोई विशिष्ट क्रम नहीं बनने देते और अलग-अलग कविताओं में बार-बार हेर-फेर से उसे चुनौती देते हैं।

नामवर सिंह के शब्दों में **"नई कविता में मुक्तिबोध की जगह वही है, जो छायावाद में निराला की थी। निराला के समान ही मुक्तिबोध ने भी अपने युग के सामान्य काव्य-मूल्यों को प्रतिफलित करने के साथ ही उनकी सीमा को चुनौती देकर उस सर्जनात्मक विशिष्टता को चरितार्थ किया, जिससे समकालीन काव्य का सही मूल्यांकन हो सका।"**

मुक्तिबोध तारसप्तक के पहले कवि थे। मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी कविता पहली बार 'तार सप्तक' के माध्यम से सामने आई, लेकिन उनका कोई स्वतंत्र काव्य-संग्रह उनके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हो पाया। मृत्यु के पहले श्रीकांत वर्मा ने उनकी केवल **'एक साहित्यिक की डायरी'** प्रकाशित की थी, जिसका दूसरा संस्करण भारतीय ज्ञानपीठ से उनकी मृत्यु के दो महीने बाद प्रकाशित हुआ।

ज्ञानपीठ ने ही **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'** प्रकाशित किया था। इसी वर्ष नवंबर 1964 में नागपुर के विश्वभारती प्रकाशन ने मुक्तिबोध द्वारा 1963 में ही तैयार कर दिये गये निबंधों के संकलन **नयी कविता का आत्मसंघर्ष** तथा **अन्य निबंध'** को प्रकाशित किया था। परवर्ती वर्षो में भारतीय ज्ञानपीठ से मुक्तिबोध के अन्य संकलन **'काठ का सपना'**, तथा **'विपात्र'** (लघु उपन्यास) प्रकाशित हुए। पहले कविता संकलन के 15 वर्ष बाद, 1980 में उनकी कविताओं का दूसरा संकलन **'भूरी भूर खाक धूल'** प्रकाशित हुआ और 1985 में 'राजकमल' से पेपरबैक में छः खंडों में **'मुक्तिबोध रचनावली'** प्रकाशित हुई, वह हिंदी के इधर के लेखकों की सबसे तेजी से बिकने वाली रचनावली मानी जाती है। कविता के साथ-साथ, कविता विषयक चिंतन और आलोचना पद्धति को विकसित और समृद्ध करने में भी मुक्तिबोध का योगदान अन्यतम है।

गोदावरीश मिश्र : एक परिचय

प्रसिद्ध उड़िया साहित्यकार **गोदावरीश मिश्र** 26 अक्टूबर 1886 को जगन्नाथ पुरी में पैदा हुए गोदावरीश मिश्र की मृत्यु 25 जुलाई 1956 को हुई थी।

उड़िया भाषा के प्रमुख रचनाकार के रूप में गोदावरीश मिश्र ने कविता, उपन्यास, नाटक, कहानियाँ, जीवन चरित्र आदि सभी विधाओं में लेखन किया। राष्ट्रीय नवजागरण के क्षेत्र में भी गोदावरीश मिश्र की लेखनी का बड़ा योगदान रहा। उनकी आत्मकथा को 'भारतीय साहित्य अकादमी' ने उनकी मृत्यु के बाद पुरस्कृत किया था। गोदावरीश मिश्र जी ने 1941 में उड़ीशा के शिक्षामंत्री और वित्तमंत्री का पद भी सम्भाला था। 'उत्कल विश्वविद्यालय' की स्थापना उनके अथक प्रयत्नों से ही सम्भव हुई थी।

देश सेवा की और सामाजिक बुराइयों को दूर करने की भावना गोदावरीश मिश्र के अन्दर आरंभ से ही थी। उन्होंने पं. गोपबन्धु द्वारा स्थापित 'सत्यवादी स्कूल' में 30 रुपये प्रतिमाह वेतन पर अध्यापक रहे। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि वे एक सच्चे राष्ट्र भक्त थे और देश सेवा की भावना उनके भीतर गहराई तक जमी हुई थी। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के रचनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील गोदावरीश मिश्र की इतनी मान्यता थी कि 1927 में अपने उड़ीसा के भ्रमण के समय गाँधी जी दो दिन उनके घर पर टिके थे। 'स्वराज्य पार्टी' के टिकट पर वे बिहार-उड़ीसा कौसिल के सदस्य भी रहे। उन्होंने 1941 से 1944 तक परलखेमंडी के महाराजा मंत्रालय में वित्त और शिक्षा मंत्री के रूप में कार्य किया। और साथ ही उन्होंने उत्थान विश्वविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनके कुछ कविता संग्रह इस प्रकार हैं।

कुसुम	–	1919
कलिका	–	1921
किसलय	–	1922
आलेखिका, कवितायन	–	1926
चयनिका	–	1932
गीतायन	–	1953
गीति गुच्छ	–	1960

महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित मिश्र जी महात्मा गांधी के कार्य को आगे बढ़ाने में अपना अहम् योगदान देते थे। १९२९ में जब गांधी ओडिसा भ्रमण यात्रा के लिए ओड़िशा आए थे तब गोदावरीश मिश्र ने उन्हें २ दिन के लिए अपने घर पर रोक लिया था।

उनकी कविताओं ने राष्ट्र के प्रति जागरूकता पैदा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका लिखा नाटक **'पुरुषोत्तम देब', 'मुकुंद देब', 'अर्ध शताब्दी रा ओड़िशा ओ तहिन रे मो स्थान'**ओड़िशा साहित्य के लिए एक अमर उपहार है।वे एक कुशल संपादक भी थे। 1924 में उन्होंने बानापुर से **"लोकमुख"** पत्रिका प्रकाशित की इसके साथ वे 'समाज' के संपादक भी थे और शशिभूषण रथ द्वारा प्रकाशित **"ईस्टकोस्ट"** के लिए भी लिखते थे। साहित्य में दिया उनका योगदान आज भी अमर है।

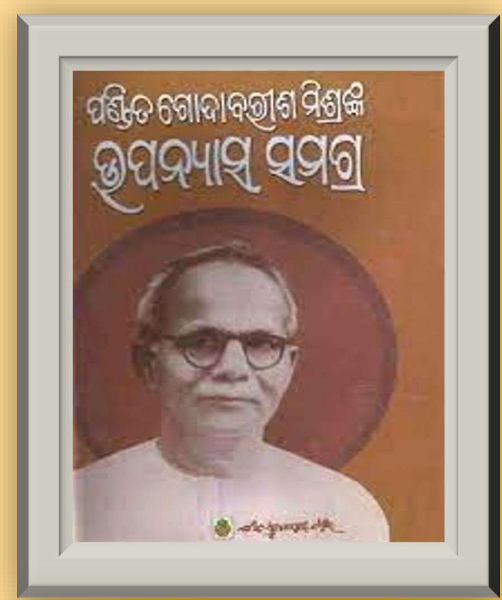

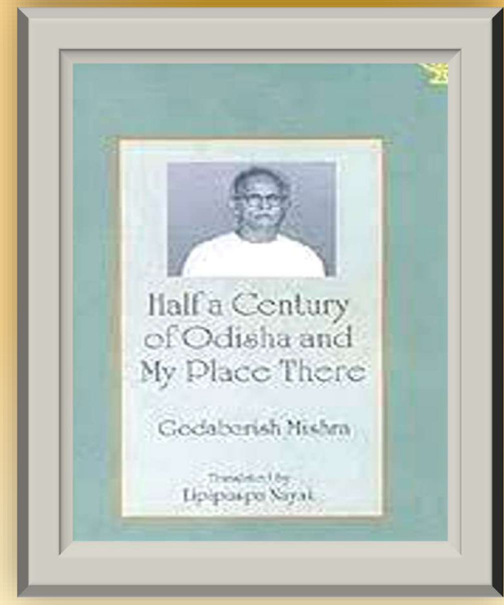

एक साधु का न्यूयार्क में बड़े पत्रकार इंटरव्यू ले रहा थे। पत्रकार- “सर, आपने अपने लास्ट लेक्चर में संपर्क और संजोग पर स्पीच दिया लेकिन यह बहुत कन्फ्यूज करने वाला था। क्या आप इसे समझा सकते हैं ?”

साधु मुस्कराये और उन्होंने कुछ अलग... पत्रकारों से ही पूछना शुरू कर दिया। "आप न्यूयॉर्क से हैं?"

पत्रकार: "Yeah..." सन्यासी: "आपके घर में कौन कौन हैं?" पत्रकार को लगा कि.. साधु उनका सवाल टालने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि उनका सवाल बहुत व्यक्तिगत और उसके सवाल के जवाब से अलग था। फिर भी पत्रकार बोला : "मेरी माँ अब नही हैं, पिता हैं तथा 3 भाई और एक बहिन हैं ! सब शादीशुदा हैं "

साधू ने चेहरे पे एक मुस्कान के साथ पूछा: "आप अपने पिता से बात करते हैं?"

पत्रकार चेहरे से गुस्से में लगने लगा...

साधू ने पूछा, "आपने अपने फादर से last कब बात की?"

पत्रकार ने अपना गुस्सा दबाते हुए जवाब दिया : "शायद एक महीने पहले" साधू ने पूछा: "क्या आप भाई-बहिन अक़्सर मिलते हैं, आप सब आखिर में कब मिले एक परिवार की तरह ?” इस सवाल पर पत्रकार के माथे पर पसीना आ गया कि इंटरव्यू मैं ले रहा हूँ या ये साधु ? ऐसा लगा साधु, पत्रकार का इंटरव्यू ले रहा है? एक आह के साथ पत्रकार बोला : "क्रिसमस पर 2 साल पहले।"

साधू ने पूछा: "कितने दिन आप सब साथ में रहे ?" पत्रकार अपनी आँखों से निकले आँसुओं को पोंछते हुये बोला : "3 दिन..." साधु: "कितना वक्त आप भाई बहनों ने अपने पिता के बिल्कुल करीब बैठ कर गुजारा ?

पत्रकार हैरान और शर्मिंदा दिखा और एक कागज़ पर कुछ लिखने लगा...

साधु ने पूछा: " क्या आपने पिता के साथ नाश्ता , लंच या डिनर लिया ? क्या आपने अपने पिता से पूछा के वो कैसे हैँ? माता की मृत्यु के बाद उनका वक्त कैसे गुज़र रहा है..... !

साधु ने पत्रकार का हाथ पकड़ा और कहा: "शर्मिंदा, या दुखी मत होना। मुझे खेद है अगर मैंने आपको अनजाने

में चोट पहुंचाई हो, लेकिन ये ही आपके सवाल का जवाब है । संपर्क और संजोग" (Contact and Connection) आप अपने पिता के सिर्फ संपर्क (Contact) में हैं, पर आपका उनसे कोई 'Connection'(जुड़ाव) नहीं है। You are not connected to him। आप अपने father से संपर्क में हैं, जुड़े नहीं है। हमेशा आत्मा से आत्मा का होता है। heart से heart होता है। एक साथ बैठना, भोजन साझा करना और एक दूसरे की देखभाल करना, स्पर्श करना, हाथ मिलाना, आँखों का संपर्क होना, कुछ समय एक साथ बिताना आप अपने पिता, भाई और बहनों के संपर्क ('Contact') में हैं लेकिन आपका आपस मे कोई जुड़ाव (Connection) नहीं है।”

पत्रकार ने आंखें पोंछी और बोला: "मुझे एक अच्छा और अविस्मरणीय सबक सिखाने के लिए धन्यवाद।"

आज ये भारत की भी सच्चाई हो चली है। सबके हज़ारो संपर्क (contacts) हैं पर कोई connection नहीं। कोई विचार-विमर्श नहीं। हर आदमी अपनी नकली दुनिया में खोया हुआ है। वो साधु और कोई नहीं **स्वामी विवेकानंद** थे।

साधु ने पूछा: " क्या आपने पिता के साथ नाश्ता , लंच या डिनर लिया ? क्या आपने अपने पिता से पूछा के वो कैसे हैँ? माता की मृत्यु के बाद उनका वक्त कैसे गुज़र रहा है..... !

साधु ने पत्रकार का हाथ पकड़ा और कहा: "शर्मिंदा, या दुखी मत होना। मुझे खेद है अगर मैंने आपको अनजाने में चोट पहुंचाई हो, लेकिन ये ही आपके सवाल का जवाब है । संपर्क और संजोग" (Contact and Connection) आप अपने पिता के सिर्फ संपर्क (Contact) में हैं, पर आपका उनसे कोई 'Connection'(जुड़ाव) नहीं है। You are not connected to him। आप अपने father से संपर्क में हैं, जुड़े नहीं है। Connection हमेशा आत्मा से आत्मा का होता है। heart से heart होता है। एक साथ बैठना, भोजन साझा करना और एक दूसरे की देखभाल करना, स्पर्श करना, हाथ मिलाना, आँखों का संपर्क होना, कुछ समय एक साथ बिताना आप अपने पिता, भाई और बहनों के संपर्क ('Contact') में हैं लेकिन आपका आपस मे कोई जुड़ाव (Connection) नहीं है।”

पत्रकार ने आंखें पोंछी और बोला: "मुझे एक अच्छा और अविस्मरणीय सबक सिखाने के लिए धन्यवाद।"

आज ये भारत की भी सच्चाई हो चली है। सबके हज़ारो संपर्क (contacts) हैं पर कोई connection नहीं। कोई विचार-विमर्श नहीं। हर आदमी अपनी नकली दुनिया में खोया हुआ है। वो साधु और कोई नहीं **स्वामी विवेकानंद** थे।

यूको बैंक, साल्टलेक अंचल द्वारा क्षेत्रीय एवं हिंदी भाषा में किए जा रहे कार्यों की कुछ झलकियाँ

আন্তর্জাতিক যোগ দিবস

নিজস্ব প্রতিনিধি: ইউকো ব্যাংক, সল্টলেক জোনাল অফিসের উদ্যোগে আন্তর্জাতিক যোগ দিবস উদ্‌যাপন অত্যন্ত উদ্দীপনার সঙ্গে অনুষ্ঠিত হয় নিউটাউন অ্যাকশন এরিয়া-১-এ সদ্য উদ্বোধন হওয়া নিউটাউন শাখায়। অনুষ্ঠানটি একটি যোগা সেশন দিয়ে শুরু হয়, যেখানে গ্রাহক এবং ব্যাংকের কর্মকর্তা-কর্মচারীরা এক... অংশগ্রহণ করেন এবং সকলে একটি স্বাস্থ্যকর জীব... গ্রহণ করেন। এই পর্বের পরে, জনসচেতন... পরিকল্পিত পদযাত্রা (ওয়াকাথন) ... পরীক্ষা...

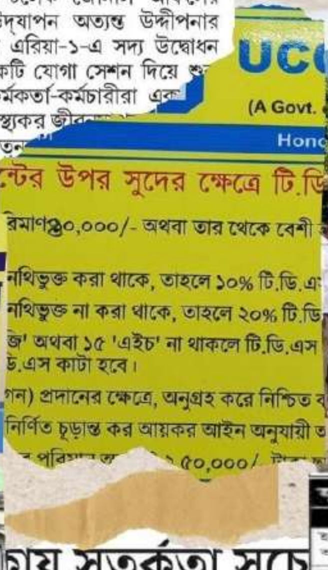

যূকো বैंक UCO BANK — সল্টলেক জোনাল অফিস, বিদ্যুৎ ভবন, ডিজে ব্লক, সল্টলেক সিটি, সেক্টর-২, কলকাতা - ৭০০০৯১

শাখা প্রেমিসেস আবশ্যক

ইউকো ব্যাঙ্ক, অগ্রগামী রাষ্ট্রায়ত্ত ব্যাঙ্ক হিসেবে নিম্নোক্ত স্থানগুলিতে অগ্রাধিকারের ভিত্তিতে একতলায় ভাড়ায় ১০০০-১২০০ বর্গফুট কার্পেট এরিয়া, (এটিএম সহ) শাখা প্রেমিসেস আবশ্যক।

ক্রম নং	স্থান	জেলা
১	মামুদপুর	উত্তর ২৪ পরগনা
২	অ্যাকশন এরিয়া III, নিউ টাউন	উত্তর ২৪ পরগনা
৩	সল্টলেক সেক্টর V	উত্তর ২৪ পরগনা
৪	খারিশুপ	হাওড়া
৫	বেলিলিয়াস রোড	হাওড়া

বিস্তারিত ইউকো ব্যাঙ্ক সল্ট লেক জোনাল অফিস, উক্ত ঠিকানা থেকে ব্যাঙ্কের ওয়েবসাইট www.ucobank.com/tenders. থেকে সংগ্রহ করা যাবে। সিলকরা খামে নির্ধারিত বয়ানে আবেদন দাখিলের শেষ তারিখ ২১ আগস্ট ২০২৫।

তারিখ : ৩০.০৭.২০২৫

ডিজিএম এবং জোনাল ম্যানেজার
সল্ট লেক জোন

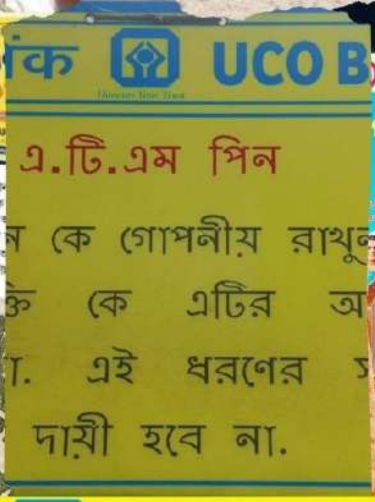

उधम सिंह : एक परिचय

(26 दिसम्बर 1899 – 31 जुलाई 1940)

उधम सिंह भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। उधम सिंह का जन्म 26 दिसम्बर 1899 को पंजाब प्रांत के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में एक सिख-कम्बोज परिवार में हुआ था। उत्तर भारतीय राज्य उत्तराखण्ड के एक जनपद का नाम भी इनके नाम पर उधम सिंह नगर रखा गया है।

उधमसिंह के बचपन का नाम शेर सिंह और उनके भाई का नाम मुक्तासिंह था, जिन्हें अनाथालय में क्रमश: उधमसिंह और साधुसिंह के रूप में नए नाम मिले। इतिहासकार मालती मलिक के अनुसार उधमसिंह देश में सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे और इसीलिए उन्होंने अपना नाम बदलकर 'राम मोहम्मद सिंह आजाद' रख लिया था जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है।

1919 में उन्होंने अनाथालय छोड़ दिया और क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में शमिल हो गए। उधमसिंह अनाथ हो गए थे परंतु इसके बावजूद वह विचलित नहीं हुए और देश की आजादी तथा जनरल डायर को मारने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए लगातार काम करते रहे।

उधम सिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधमसिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर माइकल ओ'डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने इस ध्येय को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् 1934 में उधम सिंह लंदन पहुँचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने भारत के यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओ'डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगे।

जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओ'डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुँच गए। अपनी रिवॉल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवॉल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके। बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओ'डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओ'डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला। 4 जून 1940 को उधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई 1940 को उन्हें पेंटनविले जेल में फांसी दे दी गई।

83 वाँ वर्ष राष्ट्र के विश्वास के नाम

अंचल कार्यालय, साल्टलेक की गतिविधियाँ

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

खीरा के फायदे

सलाद के रूप में सम्पूर्ण विश्व में खीरा का विशेष महत्त्व है। खीरा में विटामिन सी, विटामिन के, कॉपर, मैग्नीशियम, पोटेशियम, मैंगनीज और सबसे महत्वपूर्ण सिलिका जैसे आवश्यक पोषक तत्व **होते हैं**। खीरा को सलाद के अतिरिक्त उपवास के समय फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा विभिन्न प्राकर की मिठाइयाँ भी तैयार की जाती है। गर्मियों में खीरा किसी न किसी रूप में जरूरी खाया जाता है। इस दौरान हल्का और साफ खाना जरूरी होता है क्योंकि सर्दियों के मुकाबले गर्मियों में डायरिया और फूड पॉइजनिंग की समस्या ज्यादा होती है। मगर खीरा के साथ में एक चेतावनी भी जुड़ी हुई है और वो यह है कि खीरा खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए।

खीरे में 95 फीसदी पानी होता है। खीरा में विटामिन सी, विटामिन के, कॉपर, मैग्नीशियम, पोटेशियम, मैंगनीज और सबसे महत्वपूर्ण सिलिका जैसे आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। यह त्वचा और बालों के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। इसमें 95 फीसदी पानी होता है ऐसे में इसे खाने के बाद पानी पीने से आप इन आवश्यक पोषक तत्वों से वंचित रह सकते हैं। पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण के लिए कच्ची सब्जियां और फल खाने के बाद पानी पीने से बचने की सलाह दी जाती है।

खीरा खाने के तुरंत बाद पानी पीने से जीआई गतिशीलता में वृद्धि होती है, जिससे पाचन और अवशोषण की प्राकृतिक प्रक्रिया को नुकसान पहुंचता है। खीरे के साथ या उसके बाद पीने पीने से शरीर का पीएच स्तर पर प्रभाव पड़ता है। भोजन पचाने के लिए शरीर को पीएच स्तर की आवश्यकता होती है। बहुत अधिक पानी पीएच स्तर को कमजोर कर सकता है। इसके अलावा खीरे के ऊपर पानी पीने से खाद्य पदार्थों को पचाने के लिए आवश्यक एसिड प्रभावी ढंग से काम नहीं कर पाते, जिससे आपको पाचन से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं अगर आप पाचन और कब्ज जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, तो आपके लिए उच्च पानी वाले खाद्य पदार्थ जैसे खीरा रामबाण साबित हो सकता है। यह आपकी आंतों को आराम पहुंचाएगा, लेकिन यदि आप खीरे के साथ पानी पीते हैं, तो आपको डायरिया और लूज मोशन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

खीरा सलाद, रायता, सैंडविच के अलावा सूप में भी डाल सकते हैं। खीरे के पकौड़े भी खूब लजीज होते हैं। खीरे को ड्रिंक्स में भी प्रयोग किया जा सकता है।

खीरा सलाद, रायता, सैंडविच के अलावा सूप में भी डाल सकते हैं। खीरे के पकौड़े भी खूब लजीज होते हैं। खीरे को ड्रिंक्स में भी इस्तमाल किया जा सकता है। खीरा और उसके जूस में कई प्रकार के पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो सेहत के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। वहीं, इस बात का ध्यान रखें कि यह किसी भी बीमारी का इलाज नहीं है, इसका उपयोग स्वास्थ्य समस्याओं से बचाव और उनके प्रभाव को कम करने में कुछ हद तक सहायक हो सकता है।

खीरे के जैसे ही खीर के जूस में कई प्रकार के विटामिन पाए जाते हैं। इसमें विटामिन सी, विटामिन बी 6, विटामिन ए, विटामिन ई और विटामिन के जैसे विटामिन शामिल हैं । इनमें विटामिन सी कॉग्नीटिव हानि (जिसमें याद करने, नई चीजें सीखने, ध्यान केंद्रित करने या निर्णय लेने में परेशानी होना शामिल है) और सेरेब्रोवास्कुलर रोग (मस्तिष्क में खून की कमी के कारण होने वाली मस्तिष्क की क्षति) से बचाव करने में मदद कर सकता है। खीरे के जूस का सेवन डिहाइड्रेशन यानी शरीर में पानी की कमी, की समस्या में भी फायदेमंद हो सकता है। एक रिसर्च के अनुसार खीरे में लगभग 96 प्रतिशत तक पानी की मात्रा पाई जाती है। ऐसे में हम कह सकते हैं कि खीरे के जूस का सेवन शरीर को रिहाइड्रेट करने का काम कर सकता है ।

पेट की गड़बडी तथा कब्ज में भी खीरा को औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। खीरा में अधिक मात्रा में फाइबर मौजूद होता है खीरा कब्ज़ दूर करता है। पीलिया, प्यास, ज्वर, शरीर की जलन, गर्मी के सारे दोष, चर्म रोग में लाभदायक है। खीरे का रस पथरी में लाभदायक है। घुटनों में दर्द को दूर करने के लिये भोजन में खीरे का सेवन अधिक मात्रा में करें| खीरा और गर्मियां साथ-साथ आती हैं। खीरा में कई पोषक तत्व होते हैं, जो उसे सेहत के लिए जरूरी बना देते हैं। खीरा को मिनरल, विटामिन और इलेक्ट्रोलाइट्स का पावरहाउस कहा जाता है। यह सैंडविच, सलाद, रायता में सबसे खास पसंद होता है।अगर आप वजन कम करना चाहते हैं, तो खीरा आपका अच्छा साथी साबित हो सकता है। खीरे में 95 फीसदी पानी होता है, जो मेटबॉलिज्म मजबूत करता है। खीरे में ज्यादा पानी की मात्रा होने के चलते आप कई ऐसी चीजों के सेवन से बच जाते हैं जिसमें वजन बढ़ाने वाली चीजें ज्यादा होती हैं। हाल ही में हुए कई शोध इस बात को साबित कर रहे हैं कि रोजाना खीरा खाने से कैंसर का खतरा कम हो सकता है। खीरा में पाए जाने वाले प्रोटीन हमारे शरीर में कैंसर से लड़ने की ताकत पैदा करते हैं। यह कैंसर या ट्यूमर के विकास को रोकता है।इम्यूनिटी पावर को मजबूत बनाने में भी खीरा अहम है। खीरे में विटामिन सी, बीटा कैरोटीन जैसे एंटी ऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स को दूर करते हैं। यह इम्यूनिटी को बेहतर बनाता है ।

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
अपने
डिवाइस को
सुरक्षित रखें
PRIVACY
ENTER
अपने मोबाइल की होम
स्क्रीन पर मजबूत पासवर्ड
लगाकर रखें और
अनाधिकृत प्रयोग को
रोकने के लिए स्वतः/
ऑटो-लॉक सुविधा का
उपयोग करें।
ऑनलाइन वित्तीय
धोखाधड़ी के मामले में
डायल करें 1930
WWW.CYBERCRIME.GOV.IN
नवीनतम अपडेट के लिए फॉलो करें
CYBERDOST
सी.आई.एस.ओ ऑफिस
यूको बैंक
UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

यूको बैंक अंचल कार्यालय, न्यू टाउन शाखा जो कि न्यू टाउन, एक्शन एरिया वन, में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया

कोलकाता, 21 जून । दिनांक 21.06.2025 को यूको बैंक अंचल कार्यालय, साल्ट लेक द्वारा नई खुली न्यू टाउन शाखा जो कि न्यू टाउन, एक्शन एरिया I वन, में स्थित है, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत योग सत्र से हुई जिसमें

ग्राहकगण एवं स्टाफ सदस्यगण संयुक्त रूप से उपस्थित रहे और सबने मिलकर स्वस्थ जीवन का संकल्प लिये। इसके पश्चात सुनियोजित रूप से एक वॉकथान और ... कार्यक्रम में अंचल कार्यालय, साल्टलेक से उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक श्री प्रदीप आनंद केशरी, न्यूटाउन शाखा से शाखा प्रमुख, श्री सुमन कुमार गौन और अंचल कार्यालय एवं निकटतम शाखाओं से समस्त स्टाफ सदस्यगण उपस्थित रहे तथा साथ ही साथ पटसन भवन के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सभी उपस्थित लोगों ने आनंदित चित्त एवं नई ऊर्जा के साथ भाग लिया और इस प्रकार यह कार्यक्रम अत्यंत सफल ...

...কোয় সতর্কতা সচেতন

...ক ও নভেম্বর সারা দেশের সঙ্গে ইউকো ...ন-সহ সল্টলেক জোনাল অফিসেও সতর্কতা পালন করা হচ্ছে। এই উপলক্ষে সল্টলেক ...বন থেকে ইউকো ব্যাঙ্কের আধিকারিক ও ...ট পদযাত্রা করেন। এই পদযাত্রায় অংশ নেন ...আর্থিক পরিষেবা বিভাগের ডেপুটি সেক্রেটারি

(ভিজিল্যান্স) শ্রী তপন কুমার মন্ডল, চিফ ভিজিলে... ভি আনন্দ, সল্টলেক জোনাল অফিসের জোনাল ... বিক্রান্ত ট্যান্ডন, ব্যাঙ্ক অফ ইন্ডিয়ার জোনাল হেডপি... নিউ টাউনে ইউকো ব্যাঙ্কের এগজিকিউটিভ ট্রে... এক অনুষ্ঠানে প্রধান অতিথি হিসেবে বক্তব্য পেশ ... মঠ রামকৃষ্ণ মিশন শিল্প মন্দিরের স্বামী বেদাতিতা...

যোগ দিবস উদযাপন ইউকো ব্যাঙ্কের

সল্টলেক : ইউকো ব্যাংক, সল্টলেক জোনাল অফিস এর উদ্যোগে আন্তর্জাতিক যোগ দিবস উদ্যাপন অত্যন্ত উদ্দীপনার সঙ্গে অনুষ্ঠিত হয় নিউটাউন অ্যাকশন এরিয়া-১-এ সদ্য উদ্বোধন হওয়া নিউটাউন শাখায়।অনুষ্ঠানটি একটি যোগা সেশন দিয়ে শুরু হয়, যেখানে গ্রাহক এবং ব্যাংকের কর্মকর্তা-কর্মচারীরা একসাথে অংশগ্রহণ করেন এবং সকলে একটি স্বাস্থ্যকর জীবনযাপনের সংকল্প গ্রহণ করেন।এই পর্বের পরে, জনসচেতনতা বৃদ্ধির উদ্দেশ্যে একটি পরিকল্পিত পদযাত্রা (ওয়াকাথন) এবং একটি বিনামূল্য স্বাস্থ্য পরীক্ষা শিবির আয়োজন করা হয়।এই অনুষ্ঠানে ইউকো ব্যাংকের সল্টলেক জোনাল অফিস -এর ডিজিএম ও জোনাল ম্যানেজার শ্রী প্রদীপ আনন্দ কেশরী, নিউটাউন শাখার শাখা প্রধান শ্রী সুমন কুমার গন এবং জোনাল অফিস ও আশেপাশের শাখাগুলির সমস্ত কর্মকর্তা-কর্মচারী, পাশাপাশি জুট ভবনের অন্যান্য বিশিষ্ট ব্যক্তিবর্গ উপস্থিত ছিলেন। তাঁদের উপস্থিতি ...

UCO BANK সল্টলেক জোনাল অফিস
ডিজে ব্লক, সল্টলেক সিটি, সেক্টর-২, ...

শাখা প্রেমিসেস আবশ্যক

...মী রাষ্ট্রায়ত্ত ব্যাঙ্ক হিসেবে নিম্নোক্ত স্থানগুলিতে অগ্রাধিকারের ...০০ বর্গফুট কার্পেট এরিয়া, (এটিএম সহ) শাখা প্রেমিসেস আ...

স্থান	জেল...
...র	উত্তর ২৪ পরগনা
...ন এরিয়া III, নিউ টাউন	উত্তর ২৪ পরগনা
...ক সেক্টর V	উত্তর ২৪ পরগনা
...ব	হাওড়া
...য়াস রোড	হাওড়া

...ব্যাঙ্ক সল্ট লেক জোনাল অফিস, উক্ত ঠিকানা থেকে ব্যা... ...m/tenders. থেকে সংগ্রহ করা যাবে। সিলকরা খামে নির্ধারি... ...খ ২১ আগস্ট ২০২৫।

ডিজিএম এবং ...

...০২৫

UCO BANK सॉल्टलेक आंचलिक कार्यालय, ...
सॉल्टलेक सिटी, सेक्टर-II, ...

शाखा परिसर की आवश्यकता है

...ी राष्ट्रीयकृत बैंक, शाखाओं के लिए नीचे उल्ले... ...00-1200 वर्ग फीट कॉरपेट क्षेत्रफल (एटीएम ... पर लेना चाहता है।

स्थान	जि...
...दपुर	उत्तर 24
...न एरिया III, न्यू टाउन	उत्तर 24
...ट लेक सेक्टर V	उत्तर 24
...रैयोप	हावड़ा
...लियस रोड	हावड़ा

...खित पते पर यूको बैंक सॉल्ट लेक आंचलिक का... हमारी आधिकारिक वेबसाइट www.ucobank... सकते हैं। निर्धारित प्रारूप में मुहरबंद लिफाफे मे... ...1 अग... 2025 है।

डीजीएम ए...

कुछ मुस्कुरा लें

टीचर- 15 फलों के नाम बताओ
संता- आम, केला, अमरूद
टीचर - शाबाश, 12 और फलों के नाम बताओ
संता- एक दर्जन केले।

टीचर बने बच्चों को चार पन्नों का निबंध लिखने को दिया।
टॉपिक था आलस्य क्या है?
रिंकू ने चार तीन पन्ने छोड़ कर चौथे पन्ने की लास्ट लाइन पर लिखा...
'यही आलस्य है'

इंटरव्यू का सवाल:
बॉस: "हमें अपनी कंपनी के लिए एक ऐसे आदमी की जरूरत है जो हमेशा मुस्कुराता रहे, चाहे कितनी भी मुसीबत क्यों न हो।"
उम्मीदवार: "सर, फिर तो आप मुझे ही रखिये! पिछली कंपनी ने जब मुझे निकाला था, तब भी मैं मुस्कुरा रहा था।"

पप्पू की पढ़ाई:
पिता: "पप्पू, इस बार परीक्षा में तुम्हारे इतने कम नंबर क्यों आए?"
पप्पू: "पापा, अच्छे नंबर तो सिर्फ उन्हीं के आते हैं जिन्हें पेपर का जवाब मालूम होता है, मुझे तो बस सवाल ही सवाल दिख रहे थे!"

सच्चा दोस्त:
चिंटू: "भाई, तूने उसे उधार क्यों दिया? वह तो कभी पैसे वापस नहीं करता।"
मिंटू: "अरे यार, दोस्ती में इतना तो चलता है! कम से कम अब वह मुझे देखकर रास्ता तो बदल लेता है, चैन की सांस तो मिलती है।"

मच्छर पहली बार उड़े।
जब वापस आया,
माँ ने पूछा – कैसा लगा?
मच्छर – मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं जहाँ भी गया, लोगों ने ताली बजाई।

यूको राजभाषा मिशन

“ राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट श्रेणी

का बैंक बनने हेतु,

बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों को

राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में,

प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा

दृढ़तापूर्वक सक्रिय कर एवं

राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कर,

नवीनतम प्रौद्योगिकी को राजभाषा से जोड़कर,

बैंकिंग को जन-उन्मुख बनाते हुए

बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना ”

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

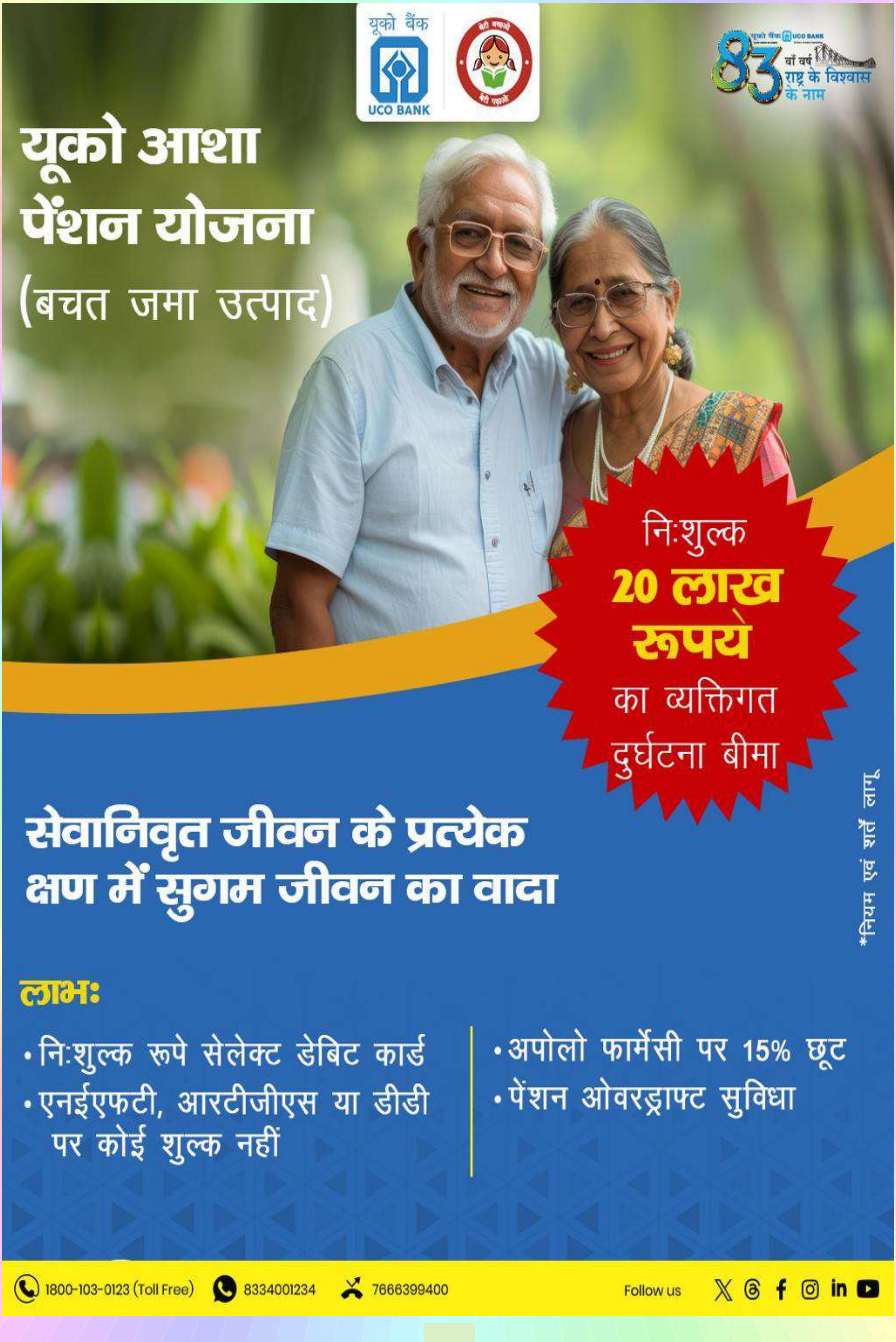
यूको बैंक
UCO BANK
83
वाँ वर्ष
राष्ट्र के विश्वास
के नाम
यूको आशा
पेंशन योजना
(बचत जमा उत्पाद)
नि:शुल्क
20 लाख
रूपये
का व्यक्तिगत
दुर्घटना बीमा
सेवानिवृत जीवन के प्रत्येक
क्षण में सुगम जीवन का वादा
*नियम एवं शर्तें लागू
लाभः
• नि:शुल्क रूपे सेलेक्ट डेबिट कार्ड
• एनईएफटी, आरटीजीएस या डीडी पर कोई शुल्क नहीं
• अपोलो फार्मेसी पर 15% छूट
• पेंशन ओवरड्राफ्ट सुविधा
1800-103-0123 (Toll Free)
8334001234
7666399400
Follow us

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust